R.N.I.N0.-UPHIN2001/8380

वर्ष 4, अंक 9, इलाहाबाद सितम्बर 2004

विश्व स्नेह समाज

हिन्दी मासिक पत्रिका

मूल्य 3 रुपये

बिजली की समस्या धीरे विकराल रुप धारण कर रही है

अटलजी को अब संन्यास ले लेना चाहिए

lqyHkbUVjus'kuylks'kylfOZlvkxsZukbZts'ku

संयुक्त राष्ट्र की आर्थिक एवं सामाजिक परिषद द्वारा विशेष सलाहकार का दर्जा प्राप्त संवयं सेवी संस्था

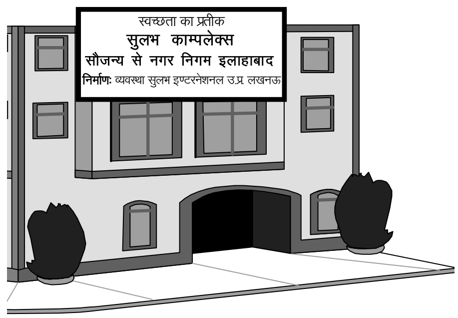

मुख्य उद्देश्यः

1. कमाऊ शौचालयों को सुलभ शौचालयों में परिवर्तित कर सर पर मैला ढ़ोने की कुप्रथा की समाप्ति तथा सफाई कर्मचारियों को इस काम से मुक्त करना।
2. सार्वजनिक शौचालयों, स्नानागारों तथा मूत्रालयों का 'पे एण्ड यूज' प्रणाली के आधार पर निर्माण करना।
3. मनुष्य–मल से उत्पन्न बायोगैस का विभिन्न कार्यो के लिए उपयोग करना।
4. अभियन्ताओं, सफाई निरीक्षकों तथा राज–मिस्त्रियों को शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में सुलभ शौचाालय निर्माण की तकनीक का प्रशिक्षण देना।
5. ग्रामीण क्षेत्रों में सुलभ शौचालयों की व्यवस्था करना।
6. इस कार्यक्रम के क्रियान्वयन में सरकार को सहयोग देना।
7. प्रचार सामग्रियों के प्रकाशन सहित जनसंचार माध्यमों तथा प्रर्दशनी के द्वारा इन कार्यक्रमों का प्रचार–प्रसार।
8. शौचालय तथा बायोगैस तथा उपयोगी सामाजिक अनुसंधान के विभिन्न विषयों पर शोध करना।
9. मैला ढ़ोने की प्रथा से मुक्त होने वाले सफाई कर्मचारियों के पुनर्वास की व्यवस्था करना तथा उनके आश्रितों को विभिन्न व्यावसायिक प्रशिक्षण में तकनीक प्रशिक्षण देना।

समाज सेवा में सदैव अग्रणी

सुलभ इन्टरनेशनल सोशल सर्विस आर्गेनाइजेशन

उत्तर प्रदेश राज्य शाखा,

ए–700ए, सेक्टर सी, सन्त मार्केट, महानगर, लखनऊ–226006

दूरभाषः 372449, 320413, फैक्सः 0522–372449

वर्ष : 4, अंक : 9 सितम्बर 2004

विश्व स्नेह समाज
हिन्दी मासिक पत्रिका

प्रधान संपादक
गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

कार्यकारी संपादकः
डॉ0 कुसुम लता मिश्रा

सहायक संपादक
रजनीश कुमार तिवारी

विज्ञापन प्रबंधक/प्रबंध संपादक
श्रीमती जया शुक्ला

सलाहकार संपादक
नवलाख अहमद सिद्दीकी

संयुक्त संपादक
मधुकर मिश्रा

ब्युरो प्रमुखः
गिरिराजजी दूबे

पत्रव्यवहार का पता :
एल.आई.जी.–93, नीमसराय, मुण्डेरा, इलाहाबाद मो0: 3155949

सम्पादकीय कार्यालय :
एम0टेक कम्प्यूटर एजुकेशन सेन्टर, पावर हाउस के पास, धुस्सा, इलाहाबाद

मूल्य एक प्रति : 3रुपये
वार्षिक मूल्य : 35.00 रुपये मात्र
विशिष्ट सदस्य : 100.00रुपये मात्र
पंचवर्षिय सदस्य : 170.00 रुपये मात्र
आजीवन सदस्यः 1100.00 रुपये मात्र

पत्रिका में प्रकाशित किसी भी रचना के लिए लेखक स्वयं जिम्मेदार होगा। पत्रिका परिवार, प्रकाशक या संपादक का इससे कोई लेना देना नहीं होगा। विवाद के संदर्भ में न्यायलीय क्षेत्र इलाहाबाद होगा।
संपादक, प्रकाशक, मुद्रक जी.के.द्विवेदी द्वारा भार्गव प्रेस बाई बाग से मुद्रित कराकर 277/486, जेल रोड, चकरघुनाथ नैनी से प्रकाशित किया.

अपनी बात

futZygksrkHkkjr

आजादी के 57 वर्ष बीत जाने के बाद भी भारत में पीने का पानी तक सामान्य जन को उपलब्ध नहीं हो पाया हैं. पानी की कमी सिर्फ शहरी समस्या नहीं है, ग्रामीण भारत में हालत और भी खराब है. जैसे–जैसे नदियां और तलहटियां सूख रही है, देश की खाद्य सुरक्षाा को खतरा बन रहा हैं. जल संसाधन मंत्रालय के आंकड़ों के अनुसार 20 में से 8 नदी घाटी क्षेत्रों में पानी की कमी है, जिससे 20 करोड़ लोगों की जिंदगी और रोजी–रोटी को खतरा है. तपता आकाश, झुलसती धरती, सूखता गला और उबलता खून हर बार गर्मियों में भारत की यही राम कहानी है.

इस समय भारत में सबसे बड़ा संकट पानी है. बड़े शहरों के आकड़े बताते है कि उनकी जरूरत के 1400 करोड़ लीटर में से उन्हे मात्र 1000 लीटर ही उपलब्ध होता है. पानी के लिए मार होते अक्सर समाचार पत्रों में पढ़ने को मिल ही जाता है. शहरो में कोई पानी के लिए लड़ने के लिए जिम जाता है तो कोई नहाने के लिए अपने सुविधा सम्पन्न रिश्तेदारों के वहॉ तो कोई सरकारी ऑफिसों में जाकर अपनी नित्य क्रिया को सम्पन्न करता है.

जल संसाधन मंत्रालय के आकलन के अनुसार 2021 तक 35 बड़ा शहरों में पानी की मांग दोगुनी होकर 140.6 करोड़ घन लीटर तथा इनकी आबादी 20. 20 करोड़ हो जाएगी. लेकिन पानी की मात्रा आज के बराबर ही रहेगी. जिससे पानी को लेकर युद्ध होना आम बात हो जाएगी. इसे कुछ लेखक तथा फिल्मकार भी इस पर नजर डालने लगे है.

भारत में दुनिया की 2.45 प्रतिशत धरती और ताजा के पानी के प्रतिशत स्रोत उपलब्ध है. भारत में हिमपात और वर्षा 4000 अरब घन मीटर होती है। जिससे 1864 अरब घन मीटर पानी आता है जिसमें से मात्र 690 अरब घन मीटर ही इस्तेमाल होता हैं शेष 1179 अरब घन मीटर भूजल और जोड़ दे तो 1122 अरब घन मीटर पानी की वास्तविक उपलब्धता का मतलब है एक अरब से ज्यादा आबादी वाले देश में हर व्यक्ति के लिए 1122 घन मीटर पानी उपलब्ध है. ये ऑकड़े बताते है कि भारत में पानी की कमी नहीं होनी चाहिए. पर हकीकत में ऐसा नहीं है. हर साल 91 जिलों में सूखा पड़ता है तो 83 जिलें में बाढ़ की चपेट में आते है.

इसके समाधान के लिए जल भंडार बनाने पर जोर देना होगा. नदी घाटियों की गहराई बढ़ानी होगी. दीर्घकालिक समाधानों पर विचार करना होगा. जाहिर तौर पर अगर गंभीरता से इस समस्या को नहीं लिया गया तो पानी भी युद्ध करवायेगा।

जी.के.द्विवेदी

प्रधान संपादक

सोनिया गॉधी कांग्रेस पार्टी जिन्दाबाद

स्वतंत्रता दिवस पर सभी क्षेत्र वासियों को हार्दिक बधाई

मो. हलीम अंसारी

पूर्व इंका प्रत्याशी, झूसी

विधानसंभा क्षेत्रा एवं जिला महामंत्री, कांग्रेस, इलाहाबाद

निवासः सहसो, इलाहाबाद फोनः 288213, 288224

डॉ0 सोनेलाल अपना दल जिन्दाबाद

स्वतंत्रता दिवस पर सभी क्षेत्र वासियों को हार्दिक बधाई

चौधरी परशुराम निषाद

प्रदेश प्रभारी, अपना दल

निवासः प्रयाग घाट रेलवे स्टेशन, दारागंजे, इलाहाबाद

संस्थापित :1987 उ0प्र0 सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त ☎ 2636421

श्याम लाल इंटर कॉलेज

चकिया, कसारी–मसारी, इलाहाबाद

कक्षा :केजी से 12 तक (विज्ञान एवं कलावर्ग)

(बालक / बालिकाओं)

प्रधानाचार्या
सुनीता कुशवाहा
(एम.एससी.बी.एड)

प्रबंधक
अनिल कुशवाहा

स्थापित :1982 उ0प्र0 सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त रजि. 1030

किशोर गर्ल्स हाईस्कूल एवं कॉलेज

एवं fd'kksj dkWUosUV Ldwy

कक्षाए : नर्सरी से कक्षा 12 तक

प्रवेश प्रारम्भ सत्र–2004–05

प्रधानाचार्या
कु0 सविता सिंह भदौरिया

82 / 102, मीरा पट्टी, टी.पी. नगर, जी.टी.रोड, इलाहाबाद

प्रबंधक
वी.एन. साहू

दाऊजी का है कहना हर अनाथ और बृद्ध है मेरा अपना

स्नेहालय

(अनाथाश्रम एवं बृद्धाश्रम)

स्व0 गोरखनाथ दूबे पुस्कालय

सूचना और सहयोग आपका, परवरिश हमारी

ग्रामः टीकर पोस्टः टीकर (पैना) जिलाः देवरिया, उ0प्र0 में
निर्माणाधीन अनाथ एवं बृद्धा आश्रम में सहयोग करें

आपका छोटा सहयोग, आपका छोटा सा पैसा
कर सकता है आपके किसी भाई–बहन, बुर्जूग की सेवा

सहयोग के लिए हमें निम्न पते पर सम्पर्क करें या लिखें:

निवेदकः
दाउजी
सचिव / प्रबंधक
जी.पी.एफ.सोसायटी
स्नेहालय (अनाथ एवं बृद्धाआश्रम)

पंजीकृत कार्यालयः
एल.आई.जी–93, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद
0532–3155949

श्री पी.एस.दूबे,
संतोष दूबे, सत्यानन्द(गुड्डू)
पुष्पेन्द्र(पप्पू), गिरिराजजी दूबे
ग्राम–टीकर, पोस्ट–टीकर,पैना,
देवरिया, उ.प्र.

नोटः कृपया चेक / ड्राफ्ट जी.पी.एफ.सोसायटी के नाम से ही काटे, सहयोग राशि देकर रसीद अवश्य प्राप्त करें

R.N.I.No.U.P.HIN2001/8380 Postal Reg.: Ad306/2003-05

प्रिय सम्मानित पाठकों आपके अपार स्नेह व सहयोग के बल पर हम अपने सफलतम तीन वर्ष सितम्बर 2004 के पूरे करने जा रहे हैं. यह अवसर चूंकि हिन्दी दिवस के माह में पड़ रहा है इसलिए इसे हम **'पत्रकारिता एवं हिन्दी सेवा विशेंषाक** के रुप में प्रकाशित करेंगें तथा इसे इलाहाबाद के विकास के विकास से भी जोड़ेगें. हमें उम्मीद ही नहीं पूर्ण विश्वास भी है कि हमारे पिछले विशेंषाक की तरह यह विशेषाक भी बहुचर्चित रहेंगा और आम जन द्वारा सराहा जाएगा. आप इससे सबंधित लेख व रचनाएं हमें शीघ्र भेजने का कष्ट करें साथ ही साथ अपने संस्थान, प्रतिष्ठान, फर्म व स्वयं का विज्ञापन शीघ्र अतिशीघ्र बुक करा लेवें.

बदल दे जिदंगी आपकी

बाजार की सबसे सस्ती पत्रिका

कीमत मात्र
तीन रुपये

विश्व

स्नेह

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका

समाज

आपके विचार स्नेह के साथ

संपादक जी नमस्कार

विश्व स्नेह समाज का सिल्वर जुबली अंक 'पत्रकारिता विशेषांक' प्राप्त हुआ. आपने इस अंक के माध्यम से पत्रकारिता की जानकारी दी है. इस हेतु साधूवाद. आगे हिन्दी सेवा विशेषांक पर आधारित अंक निकाले. हम भी 15 वर्ष से हिन्दी सेवा में लगे हैं. शुभकामनाओं के साथ अगले अंक की प्रतिक्षा में. **वी.एस. दूबे**

केन्द्र व्यवस्थापक,प्रेरणा एजुकेशन सेन्टर 3/3, सुखसागर सोसायटी, जयदेव सिंह नगर, मांडुप, मुम्बई–78

सेवा में,

माननीय प्रधान सम्पादक,

महोदय,

पत्रिका का अंक सस्नेह प्राप्त हुआ. जब मैं फरवरी के पृष्ठ संख्या 20 पर अपनी प्रकाशित कविता 'विश्व स्नेह समाज' की रचना, भारतीय संस्कृति की पहचान' को पढ़ा तो मेरा मन पुलकित हो उठा. आपकी तथा आपके संपादक मंडल की प्रशंसा करने के लिए मेरे पास न तो वाणी है और न शब्द. अपने सुखानुभूति और आपके सहानुभूति को व्यक्त करना मेरे लिए संभव नहीं हो पा रहा है. फिर भी इतना कहे बिना रहा भी नहीं जा रहा हैः–

प्रधान सम्पादक श्रद्धेय गोकुलेश्वर,\
शत वन्दन शत कोटि नमन्।\
'विश्व स्नेह समाज' फलित हो\
यही मेरा पूजा अर्चन।।\
नामों के अनुसार गुणवत्ता,\
विश्व स्नेह समाज की है।\
वसुधैव कुटुम्कम् का सिद्धान्त,\
विश्व स्नेह समाज की है।।\
प्रयाग राज की पावन धरती,\
जहॉ प्रवाहित किया सरस्वती।\
विज्ञान वहीं पर बढ़ चढ़ कर,\
ज्योतित करती भारत–भारती।।\
उसी माटी को आपने अपना,\
कर्म क्षेत्र महान बनाया।\
विश्व स्नेह सामज की रचना,\
कर के देश–विदेश जगाया।।\
कठिन परिश्रम दूर दृष्टि निरर्थक,\
कभी नहीं हो सकता है।\
दृढ़ निश्चय का परम पुजारी,\
असंभव–संभव कर सकता है।।\
राष्ट्र भाषा हिन्दी की पत्रिका,\
विश्व स्नेह समाज की है।\
जैसे कल थी कल भी रहेगी,\
जैसे कि वह आज भी है।।\
विश्व स्नेह समाज को मेरा,\
तन–मन जीवन अर्पित है।\
सेवा में श्रद्धा के फूल,\
सादर सहित समर्पित है।।

राजेश कुमार सिंह

आत्मज श्री पंचम सिंह, 235–डी, किदवई नगर, अल्लापुर, इलाहाबाद–211006

सुश्री कुसुम जी

नमस्कार

आशा है सानन्द व्यवस्थित हैं। 'विश्व स्नेह समाज' का जुलाई–2003 का अंक मिला–स्मरण के लिए शुक्रिया! अंक पूरे एक साल बाद पहुँचा है. इसे डाक विभाग की कछुवाचाल समझूँ या आपके स्मरण की....? बहरहाल, पत्रिका अच्छी लगी, उपयोगी सामग्री है इसमें। 'निर्जल होता भारत' विशेष रुप से उल्लेख है.पानी को पानी की तरह बहाते हम लोग अभी इसका महत्व नहीं समझ रहे हैं! पछताएंगे। यदि पत्रिका नियमित हो तो फिर नया अंक भिजवाएं. शेष क्रमशः, शुभकामनाओं सहित! **अशोक अंजुम**

सम्पादक 'प्रयास', ट्रक गेट, वैद्य दरगढ़ के पास, कासिमपुर, पा.हा. अलीगढ़–202127

आदरणीय द्विवेदी जी

सादर नमन्

आप का पत्र लगभग 15 दिन पूर्व मिला था एवं आज ही एक साथ पत्रिका के दो अंक भी प्राप्त हुए. मैं आपके पत्र का तत्काल उत्तर न दे सका इस हेतु क्षमा प्रार्थी हूँ. मैं हिन्दुस्तान समाचार पत्र का रिर्पोटर भी हुँ इस नाते व्यस्तता कुछ रहती है. आप देरी को अन्यथा न लेते हुए जो दोस्ती का हाथ बढ़ाया है उसे कायम रखेंगे. सम्मानित पत्रिका निरंतर प्रेषित करने के लिए कोटिशः धन्यबाद. यह प्रभु की इच्छा थी कि उसने किसी न किसी बहाने मेरा आपसे सम्पर्क करा दिया आपने जो गागर में सागर भरने का प्रयास किया है वह वास्तव में सराहनीय एवं प्रशंसनीय है. आशा है भविष्य में इसी तरह पत्र–व्यवहार कायम रहेगा. इसी आशा के साथ. भवदीय

शरद कपूर

जिला अध्यक्ष, ग्रामीण पत्रकार एसोसिएशन, उ.प्र., खैराबाद, सीतापुर

प्रिय श्री संपादक जी,

विश्व स्नेह समाज, का अक्टूबर .2 का अंक में विन्ध्य मं त्रिकोण दर्शन से ही पूर्ण लाभ मिलता है पढ़ा. धार्मिक जानकारी देने के हेतु कोटिशः धन्यबाद. डाक से आज ही आपकी पत्रिका मिली. इस सेवा हेतु भी धन्यबाद. विगत तीस वर्षो से विभिन्न समाचार पत्रों से जुड़कर पत्रकारिता के माध्यम से समाज सेवा करने का सौभाग्य मिला और वर्तमान में झारखण्ड की सर्वाधिक प्राचीन हिन्दी दैनिक 'राची एक्सप्रेस' का देवधर जिला का ब्यूरो प्रमुख हूँ. कभी मौका मिलेगा तो द्वादश ज्योतिलिंग में एक रावणेश्वर वैद्यनाथ के विषय में पाठको के लिए प्रेषित करेन का प्रयास करुंगा. मैं एक वरिष्ठ पत्रकार और वैद्यनाथ धाम तीर्थ

गुप्त रोगों का सफल ईलाज

नामर्दी, स्वप्न दोष, शीघ्र–पतन, धातु पतला, छोटापन, पतलापन, टेढ़ापन, लिकोरिया, मासिक गड़बड़ी, चेहरे की छाईयां और गुप्त रोगों का सफल ईलाज किया जाता है.

होटल समीरा
काटजू रोड निकट रेलवे स्टेशन,इलाहाबाद

हकीम एम0शमीम
SC. UM(CAL) Reg.

मिलने का समयः
प्रत्येक माह 16 से 20 तारिख
सुबहः 9से रात्रि 8 बजे तक।

स्थान का पण्डा भी हूँ. उम्र 50 वर्ष है. अगर कोई सेवा की आवश्यकता हो तो बेहिचक लिखेंगे. बाबा वैद्यनाथ से पत्रिका की प्रगति की कामना करता हूँ. कभी देवघर आना हुआ तो याद करेंगे. मेरा नाम जिलेभर में प्रसिद्ध है. वैसे मंदिर के पास ही शिवगंगा बगल में मेरा निजी आवास है. शुभकामनाओं सहित. आपका ही

मुन्नू खवाड़े पण्डा,
वैद्यनाथ धाम, देवधर, झारखण्ड

✍ परम आदरणीय,
प्रधान संपादक, हिन्दी मासिक पत्रिका विश्व स्नेह समाज, प्रमुख समाज सेवी, लेखक एवं पत्रकार माननीय गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी जी आपको सादर प्रणाम! हम सकुशल रहते हुए आप सभी के स्वस्थ सुखी सम्पन्न जीवन की कामना करता हूँ. महोदय आप द्वारा प्रेषित पत्रिका –माघ मेला विशेषांक प्राप्त हुई. आपको कोटि–कोटि धन्यबाद!
महोदय पत्रिका के इस अंक में अपनी बात के माध्यम से जो सम्पादकीय विचार प्रस्तुत किये गये हैं वह बहुत ही सारगर्भित तथ्यपरक एवं वास्तविकता से परिपूर्ण है. अमर शहीद चन्द्रशेखर आजाद की पुण्य स्मृति में लिखित लेख –कहॉ गयी चन्द्रशेखर की अस्थियॉ– बहुत ही उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक लगा, बिल्कुल सचित्र वर्णन में शब्दशः उल्लेख करना अति विद्वता भरा कार्य है. पढ़ने पर ऐसा प्रतीत हुआ कि स्वतन्त्रता कालीन अविस्मरणीय घटना को स्वतः ऑखों से देखा जा रहा है.
महोदय, आपके लिए–

हर राते पूनम बन जाए,
ऐसा नहीं हुआ।
सब नदियां गंगा बन जाए,
ऐसा नहीं हुआ.
सब पत्थर हीरा बन जाए,
ऐसा नहीं हुआ.
सब इच्छा पूरी हो जाए
ऐसा नहीं हुआ

आपका सहयोगाकांक्षी
ईश्वर शरण शुक्ल
सी/ओ श्री संजय शर्मा, 125/1/4, चकदाउद नगर, नैनी, इलाहाबाद

✍ महोदय,
जुलाई 04 का अंक पढ़ने को मिला. इस अंक को देखकर तो ऐसा लगता है कि वाकई पत्रिका नें आपके निदेशन में कठिन परिश्रम किया जा रहा है. मैं पत्रिका को उस समय से नियमित सदस्य हुँ जो जब पत्रिका का कवर श्वेत श्याम हुआ करता था. तब से लेकर आज विगत चार वर्षो में आपने इसमें अद्वितीय सुधार किया है. हर तरह से यह पत्रिका दिन–प्रतिदिन निखरती जा रही है. इस अंक में अपनी बात में प्रधान संपादक के विचार वास्तव में सारगर्भित है. इसी अंक में सोनिया मोइन से सोनिया माता का तक सफर लेख, अनीता चौहान की कहानी आखिरी मुकाम, और अस्पतालों व नर्सिग होमों की लूट खसोट की सत्यता को व्यां करता लेख लूट का अड्डा बना है देवरिया का सेवाश्रम अस्पताल काफी सराहनीय है. पत्रिका दिन–प्रतिदिन निखरती रहे यही हमारी शुभकामनाएं है. **निशा निषाद**
गौरी बाजार, देवरिया

नवभारती पब्लिक स्कूल

189बी/1, नागबासुकी मार्ग, दारागंज, इलाहाबाद

कक्षाः नर्सरी से आठ तक

पढ़ाई के साथ–साथ कम्प्यूटर की शिक्षा, बच्चों को सभी प्रकार की सुविधा,लाइट न होने पर जनरेटर की व्यवस्था

प्रधानाचार्या
ऊषारानी श्रीवास्तव

नोटः अनुभवी अध्यापिकाओं की आवश्यकता है।

अटलजी को अब संन्यास ले लेना चाहिए

राही अलबेला

पूर्व प्रधानमंत्री बिहारी वाजपेयी को अपनी इज्जत व साख बनाये रखने के लिए कोई सुनहरा सा अवसर या बहाना ढुढ़कर राजनीति से सन्यास ले लेना चाहिए. नहीं तो जिस तरह से अटल और आडवाणी में शीत युद्ध चल रहा है. आडवाणी अपनी बातों को मनवाते जा रहे हैं उससे तो यहीं लगता है कि आगे अटल जी का भाजपा में अपना वर्चस्व बनाये रखना बहुत मुश्किल होगा.

कुर्सी की कितनी बड़ी अहमियत होती है यह अटल बिहारी बाजपेयी के कुर्सी छोड़ने के बाद स्पष्ट दिख रहा है. जब अटलजी कुर्सी पर आसीन थे तो वे सब कुछ थे, हर तरफ अटल ही अटल थे. मगर उनके नेतृत्व में इस बार सत्ता नहीं मिली तो वे बेबस, लाचार साबित हो रहें है. अब तो ऐसा लगता है कि वे पूरी तरह बेबस हैं. पार्टी व राजग गठबंधन के बीच उनकी अहमियत दिन प्रतिदिन कम ही होती जा रही हैं. मोदी प्रकरण के बाद तो उनकी स्थिति पूरी तरह से दयनीय सी दिखती है, तभी तो वे कभी वह मोदी को चुनाव हारने का कारण मानते हैं और उन्हें मुख्यमंत्री के पद पर नहीं देखना चाहते हैं. मगर वही अटलजी भाजपा अध्यक्ष वैकया नायडू द्वारा थपकी देने के बाद कह देते हैं कि मोदी के कारण नहीं बल्कि अति विश्वासस और गुमान के बदौलत हारे हैं. कभी कहते हैं कार्यकारिणी में मोदी प्रकरण पर बात होगी, तो तुरंत पार्टी का बयान आता है कि नहीं कार्यकारिणी में किसी भी तरह से मोदी पर बात नहीं होगी.

पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी अपने संसदीय क्षेत्र लखनऊ में कहते हैं कि राज्यपालों का केन्द्र सरकार द्वारा बर्खास्त करना अलोकतांत्रिक एवं सवैधानिक व्यवस्था से परे हैं, इसके खिलाफ वह सड़कों पर नहीं उतरेगें बल्कि अदालत का दरवाजा का खटखटा सकते हैं, लेकिन तुरंत भाजपा अध यक्ष वैंकेया नायडू कह देते हैं कि वह अदालत नहीं जाएंगें. बार–बार अटलजी के बयान के विपरित भाजपा अध्यक्ष का बयान देना आखिर क्या साबित करता हैं.

अटलजी के लखनऊ प्रवास के दौरान उन्हें पार्टी के भितरघात और कार्यकर्ताओं की उपेक्षा का भाव खुलेआम दिखायी पड़ा. इसे देखकर प्रदेश के कार्यकर्ताओं को पूरा विश्वास था कि अटलजी कोई न कोई गुल जरुर खिलायेंगें, लेकिन ऐसा नहीं हो सका. जो अटल जी की विवशता को दिखाता हैं.

अटलजी के गुजरात मुद्दे पर मोदी के बचाव में भाजपा अध्यक्ष, संघ प्रमुख के.सी.सुदर्शन, विहिप के वरिष्ठ नेता गिरिराज किशोर के बयानों ने से यही साबित होता है कि भाजपा में अब उदारवादियों को नहीं चलने वाली हैं. अटलजी ने अपने दिल के अंदर बहुत दिनों से छुपायें गुबार को निकाल दिया मगर तुरंत बात पलटने से यह साबित होता है कि अटलजी अब भाजपा में अब दिन प्रतिदिन कमजोर हो रहे हैं.

भाजपा के कुछ सहयोगी संगठन विहिप, संघ, बजरंग दल वाजपेयी जी पर कई सीधे निशाने साधते हुए कहते हैं कि वाजपेयी की कांग्रेस की तरह ही मुस्लिम परस्त नीति ही भाजपा के हारने का मुख्य कारण हैं. लेकिन उन्हें संघ के पालनकर्ता पूर्व मानव संसाधन विकास एवं विज्ञान मंत्री डॉ. मुरली मनोहर जोशी के द्वारा मुस्लिम संस्थाओं को रेवड़ी की तरह बाटा गया फंड नहीं दिखाई पड़ता, उनका चुनाव बाद दो करोड़ उर्दू अध्यापकों की नियुक्ति का अश्वासन देना क्या मुस्लिम तुष्टिकरण की नीति को नहीं दर्शाता हैं. फिर बाजपेयी ही इसके लिए

दोषी क्यों.? 14वीं लोकसभा में चुनाव हारना भाजपा के सहयोगी संगठनों व भाजपा के कुछ खास लोगों को नहीं पच पा रहा है. वे इसकी गहराई जाने के बजायें इसकी तोहमत अटल बिहारी वाजपेयी पर मढ़कर अपनी जान बचाना चाहते हैं.

भाजपा के कुछ सहयोगी संगठन और कट्टरवादी नेता उनको सन्यास लेने की तक सलाह दे दिये हैं. वैसे भाजपा में लाख एक जुटता की बात करने के बावजूद भाजपा में अन्तर्विरोध पनप रहे हैं. अटल जी के बयाान से यह लगता है कि आज नहीं तो कल भाजपा में वर्चस्व की लड़ाई भी तेज होगी. वर्तमान समय में राजग का एजेण्डा बालू का ढ़ेर साबित हो रहा हैं.

अटल जी के नाम पर सत्ता हासिल करने वाली भाजपा को अब वाजपेयी फुटे आंख भी नहीं सुहा रहे हैं और वाजपेयी जी इसे झेल रहे हैं. सारी परिस्थितियों पर गौर करने पर यही लगता है कि पूर्व प्रधानमंत्री बिहारी वाजपेयी को अपनी इज्जत व साख बनाये रखने के लिए कोई सुनहरा सा अवसर या बहाना ढुढ़कर राजनीति से सन्यास ले लेना चाहिए. नहीं तो जिस तरह से अटल और आडवाणी में शीत युद्ध चल रहा है और जिस तरह से आडवाणी एक करके अपने नुमाइंदो को पार्टी में काबिज किये जा रहे हैं. अपनी बातों को मनवाते जा रहे हैं. यानी वे हर तरह से अटल से आगे निकलने का पूरा प्रयास कर रहे हैं. उससे तो यही लगता है कि आगे अटल जी का भाजपा में अपना वर्चस्व बनाये रखना बहुत मुश्किल होगा.

बिजली की समस्या धीरे विकराल रुप धारण कर रही है

एक तरफ जहॉ हम परमाणु बम और विभिन्न प्रकार के उपग्रहों के प्रक्षेपण की खुशियां मना रहे है तो दूसरी तरफ बिजली और पानी से त्रस्त है इस देश अधिकतम आबादी वाला किसान। उसे खेत की सिचाई करने को पानी तक नहीं मिलता।

किसी भी देश अथवा राज्य की आत्मा किसान होते हैं लेकिन उन्हें भी हमारे देश में रोशनी और खेतों में सिचाईं के लिए बिजली नहीं मिल पा रही है। नहरों में पानी नहीं, माइनर सूख चुके है। ऐसे में खेतों में पानी पहुंचाने का एक मात्र साधन है नलकूप और ट्यूबेल। मड़ाई कार्य और थ्रेसर कैसें चलें। इसकी आवश्यकता है कि किसानों को कम से 16 घंटें बिजली की आपूर्ति की जाए लेकिन मिलती 6 घंटे भी नहीं है। जिस देश की सत्तर प्रतिशत आबादी गांवो में निवास करती है, जिनके माध्यम से लोगों को अनाज मिलता है उन्हें ही बिजली नहीं मिल पा रही है। ऐसा कौन किसान है जो 25 रूपये लीटर डीजल खरीद कर खेंतों में अन्न का उत्पादन करेगा। अगर उत्पादन करता भी है और किस दर से बेचेगा। बिजली की भारी खपत और कम वसूली को देखते हुए नये नलकूपों के कनेक्शन पर रोक लगा दी गयी है। और जो पूराने नलकूप है उनके कनेक्शन किसान खुद कटवा रहा है। जो है भी वे बिजली के अभाव में जर्जर हो रहे हैं।

पावर हाउस के कर्मचारी इस जर्जर व्यवस्था के लिए अधिकारियों को दोषी मान रहे हैं तो अधिकारी कर्मचारियों और सरकार पर। आखिर इस आरोप–प्रत्यारोप से किसका भला होगा, कर्मचारियों, सरकार, किसान या देश का।

इसका खामियाजा किसान भुगत रहा है। अनाजों के उत्पादन दिन–प्रतिदिन घट रहे है। अवैध कनेक्शनों के कारण मड़ाई कार्य एवं अन्य कृषि कार्य भी प्रभावित हो रहे हैं।

बिजली की दुर्व्यवस्था के शिकार केवल किसान ही नहीं बल्कि उद्योग धंधे भी हो रहे है। दिन प्रतिदिन बढ़ती बेरोजगारी के कारण आदमी छोटे–मोटे उद्योग लगाकर कुछ काम चलाना चाहता है। लेकिन वे भी बिजली की दुर्व्यवस्था के शिकार हो बंद हो रहे हैं। तो कुछ बंद होने के कागार पर है।

इस समस्या की जड़ में असंवेदशील अधिकारियों की तैनाती तथा उचित नियोजन का अभाव है। सामान्य 4 से 6 घंटे कटौती के बावजूद लोकल फाल्टों पर शीघ्रता से अमल न किये जाने की समस्या ने सिथिति को और नाजुक बना दिया है।

अधिकारियों की तुगलकी नीतियों एवं बदइंतजामी के चलते उपभोक्ता इस भीषड़ गर्मी में भी बिजली की मार झेल

रहे हैं।
इसके लिए जरूरी है स्थानीय अधिकारियों के साथ ही साथ जनता को जागरूक होना पड़ेगा। उपभोक्ताओं को भी अपने मुहल्ले व आसपास के लोगों को कटिया लगाने के लिए रोकने का प्रयास करना होगा। जब तक स्थानीय लोग और अधिकारियों का तालमेल नहीं बैठेगा, उपभोक्ता जागरूक नहीं होगा बिजली की मार से बच पाना मुश्किल काम होगा।
शहरों के अनेक मुहल्लों में कटियामारी का जाल बिछा रात तो रात है दिन में भी देखा जा सकता है। इसमें कतिपय विभागीय अधिकारियों और कर्मचारियों की या तो मिलीभगत रहती है अथवा वे जानबुझकर चुप्पी साधे रहते है। कटियामारी का विद्युत आपूर्ति पर बहुत ही बूरा प्रभाव पड़ता है। ऐसी भी घटनाएं प्रकाश में अक्सर आती रहती है कि विभाग के कुछ कर्मचारी अथवा दलाल कटिया मारकर बिजली की चोरी करने वालों से बाकायदा मासिक वसूली करते हैं जिसका कुछ हिस्सा अधिकारियों तक पहुॅचाया जाता है।
बिजली की आपूर्ति में लो वोल्टेज भी एक समस्या हैं। जिस पर अधिकारी ध्यान ही नहीं देते। बहुत भाग दौड़ के बाद यदि किसी तरह लो वोल्टेज की समस्या से दूर भी किया गया तो जर्जर तारें के चलते कुछ ही दिन में पुनः यह समस्या आ जाती है। पुरानें शहरों में विद्युत आपूर्ति के लिए खींचे गये तार बहुत पुराने हो गये हैं। जिससे वोल्टेज बढ़ने अथवा कटियामारी करने पर वे टूटकर गिरते रहते है, परिणामस्वरूप दुर्घटना की आशंका बनी रहती है।
बिजली की समस्या का एक और कारण स्वीकृत भार से अधिक बिजली की खपत तथा पीक आवर्स में उद्योगों का चलना बताया जाता है। स्वीकृत कम भार में अपने घरों में तीन–तीन चार–चार कूलरों का चलना भी सामान्य विद्युत सप्लाई में बाधक है।
इस बारें में अधिकारी से पूछने पर उनका कहना है कि प्रशासनिक सहयोग न मिलने के कारण स्वीकृत से अधिक भार के प्रयोग तथा कटियामारी पर अंकुश नहीं लगा पाते हैं। लेकिन जनसामान्य की तो बात ही छोड़िए तमाम अधिकारियों द्वारा भी स्वीकृत भार से अधिक बिजली का उपभोग किया जाता है। बहुत से अधिकारियों के नाम पर तो कनेक्शन भी नहीं है, फिर भी वे धड़ल्ले से बिजली का उपभोग कर रहे है, जिन्हें रोकने की कूबत विभागीय अधिकारियों में नहीं है। बिजली के विभाग के कुछ अधिशासी अभियंताओं का कहना है कि प्रशासन के अधिकारी बिजली चोरी रोकने के लिए चलाए जाने वाले अभियानों से अक्सर भागते है। यदि प्रशासन पूर्ण सहयोग करें तो बिजली की आपूर्ति ब्यवस्था को सुधारा जा सकता है। मांग की तुलना में कम विद्युत उत्पादन भी एक मुख्य समस्या है। मुख्यमंत्री, बिजली मंत्री और प्रधानमंत्री के निर्वाचन क्षेत्र में अनवरत बिजली सप्लाई दी जाती है वहां किसी की मजाल जो रोक दे।
इसके पीछे कुछ अन्य कारण भी है–
0 1991 से बिजली का कोई उत्पादन नहीं बढ़ा है केवल खपत बढ़ी है। ऐसे व्यवस्था सुचारू कैसे हो सकती है।
0 बिजली विभाग में पहले 60 से 70 प्रतिशत के आसपास राजस्व की प्राप्ति होती थी और अब 50 प्रतिशत भी मुश्किल से होती है।
0 बिजली के सुचारू रूप से संचालन के लिए उपभोक्ता को जागरूक होना चाहिए।
0 जिस प्रकार उपभोक्ता दुकान से सामान लाने व उसका हिसाब करने खुद ही जाता है उसी प्रकार उपभोक्ताओं को बिल नहीं पहुचने पर भी स्वयं बिल लेकर जमा करना चाहिए।
0 कर्मचारियें दिन–प्रतिदिन रिटायर होते जा रहे है लेकिन पिछले तीस सालों में कोई नयी भर्ती नहीं हुई है।

क्या होना चाहिए:–

0 कर्मचारियों की वेतन बृद्धि संबंधी हड़तालों को पूरी तरह गैर कानूनी घोषित कर दिया जाए।
0 वेतन बृद्धि का प्राईवेट कंपनियों की तरह कार्यप्रणाली के आधार पर कर दिया जाय। जिस कर्मचारी के कार्य क्षेत्र में कमी पायी जाये उसके वेतन पर रोक लगायी जाए।
0 भ्रष्टाचार और कामचोरी पर सख्ती से अंकुश लगाया जाए। इसके लिए सभी राजनीतिक दलों को कम कस लेनी चाहिए।
0 कटिया और अन्य तरीकों से बिजली चोरी पर अंकुश लगाने के लिए पूर्ण प्रयास किया जाय। इसके लिए कोई नई तकनीकि भी ईजात की जानी चाहिए।
0 अनावश्यक और काम चोर कर्मचारियों को हटा कर उनकी जगह पर नये कर्मचारियों खासकर युवाओं की भर्ती करनी चाहिए।
0 तकनीकि पदों पर से आरक्षण समाप्त कर देना चाहिए।
0 बिजली का निजीकरण न कर बल्कि कार्य कुशलता को बढ़ाने का प्रयास किया जाना चाहिए। ❍

हिन्दी के माध्यम से विज्ञान का प्रचार प्रसार करने वाला पहला संस्थान है: विज्ञान परिषद

जी.के.द्विवेदी

आज से 90 वर्ष पूर्व चार व्यक्तियों ने मिलकर हिन्दी के माध्यम से विज्ञान के प्रचार प्रसार करने के लिए 10 मार्च 1913 को विज्ञान परिषद् की स्थापना की थी. उसके दो वर्ष बाद 'विज्ञान' नामक मासिक पत्रिका प्रकाशन शुरु किया ग या. इसमें पं0 श्रीधर पाठक, बाबू श्याम सुन्दर दास आदि ने सहयोग किया. इसी बीच 'विज्ञान प्रवेशिका' नामक पुस्तक भी लिख दी गई. प्रारम्भ में उर्दू में भी पुस्तकें छपी किंतु बाद में हिन्दी में ही प्रकाशन होते रहे. स्वतन्त्रता प्राप्ति के काल तक आर्थिक तंगी के होते हुए भी सम्पादकों के मनोबल के कारण 'विज्ञान' पत्रिका अनवरत प्रकाशित होती रही.

1956 में पं. जवाहर लाल नेहरु ने विज्ञान परिषद भवन की नींव डाली. क्रमशः यह भवन तैयार होता गया और धीरे–धीरे परिषद की गतिविधि ायॉ बढ़ती गयी.

1958 में डॉ. सत्य प्रकाश जी की सूझबूझ से एक त्रैमासिक शोध पत्रिका का भी प्रकाशन शुरु किया गया. 1970 से डॉ0 आत्माराम के सौजन्य से सी.एस.आई.आर से 10 हजार की ग्रान्ट मिलनी शुरु हुई. इससे धीरे–धीरे 'विज्ञान' के स्तर में सुधार होता रहा और अब 2

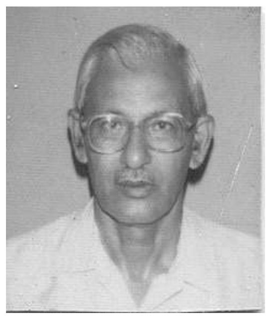

विज्ञान परिषद के प्रधानमंत्री डॉ.शिवगोपाल मिश्र

लाख वार्षिक अनुदान हो जाने से विज्ञान का कलेवर रंगीन हो चुका हैं.

यों तो परिषद् के सभापतियों में अनेक जाने माने वैज्ञानिक तथा राजनेता रह चुके हैं किन्तु चार वर्ष पूर्व जब परिषद ने डॉ. श्रीमती मंजु शर्मा को सभापति बनाया तो उन्होंने अनेक प्रकार से परिषद को ऊपर उठाने के लिए न केवल कार्यक्रम बनाए अपितु आर्थिक सहयोग भी किया. उन्हीं की प्रेरणा से विज्ञान परिषद् ने जैव प्रौद्योगिकी परिभाषा कोश तैयार करने का प्रोजेक्ट हाथ में लिया और उसे पूरा भी कर दिया.

इसके पूर्व एन.सी.एस.टी.सी के निदेशक श्री नरेन्द्र सहगल ने विज्ञान परिषद् को विज्ञान के लोकप्रियकरण के क्षेत्र में हो रहे प्रयासों को मूर्त रुप देने के लिए चुना था और दो प्रोजेक्ट स्वीकृत किए थे. एक में 'विज्ञान लेखन के व्यक्तिनिष्ठ प्रयास' पर कार्य हुआ और दूसरे में 'विज्ञान लेखन के सौ वर्ष' प्रोजेक्ट पर. इनके अतिरिक्त एक तीसरा प्रोजेक्ट भी परिषद को दिया गया था–हिन्दी में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी की लोकप्रिय पुस्तकों की संदर्भ सहित निर्देशिका.

इस तरह विगत 10 वर्षो में परिषद् ने अनेकानेक पक्षों पर कार्य किया है. स्वामी सत्यप्रकाश जी ने विज्ञान परिषद् के संस्थापकों की स्मृति में व्याख्यानमालाएँ प्रारम्भ कराने का जो संकल्प लिया था उसको पूरा करने के लिए परिषद् में प्रतिवर्ष 6–7 व्याख्यानमालाएँ सम्पन्न कराई जाती हैं. जैव प्रौद्योगिकी विभाग के द्वारा भी कुछ व्याख्यानों के लिए ध ान दिया जाता है.

परिषद् ने तीन वर्ष पूर्व मानद फेलोशिप प्रदान करने का नया अध याय शुरु किया है. इसके पर्वू परिषद् हिन्दी के लब्धप्रतिष्ठ विज्ञान लेखकों को समय–समय पर सम्मानित करती रही है.

परिषद को अखिल भारतीय स्वरुप देने के लिए दिल्ली, जोधपुर, बड़ोदरा, फैजाबाद, वाराणसी तथा

चित्रकूट में विज्ञान परिषद् की शाखाओं की स्थापना की गई है. इससे परिषद् की सभ्य संख्या में आशातीत वृद्धि हुई हैं.

इस वर्ष विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी विभाग भारत सरकार ने विज्ञान परिषद् प्रयाग को विज्ञान के लोकप्रिय करण हेतु एक लाख रुपये का पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया है. यह परिषद के लिए गौरव का विषय है. सम्प्रति विज्ञान परिषद को विज्ञान और प्रौद्योगिकी विश्व कोष की रचना का भार शब्दावली आयोग ने दे रखा है जिसके तीन खण्ड इस वर्ष के अन्त तक प्रकाशित हो जाएंगे.

आगे हम विज्ञान परिषद् को 100 वर्ष पूरा होने संदर्भ में हम प्रयासरत है कि विज्ञान परिषद् देश की सर्वोच्च वैज्ञानिक संस्था बन जाए. इसके लिए नवयुवकों को परिषद् की गतिविधियों में सक्रिय भूमिका निभानी होगी.

विज्ञान परिषद् प्रयाग के सभापति

डॉ. सर सुन्दर लाल 1913—1917
सर राजा रामपाल सिंह 1917—1920
डॉ. एनी बेसेन्ट 1920—1921
जस्टिस गोकुल प्रसाद 1921—1922
डॉ0 सर सी.वाई.चिन्तामणि 1922—1925
बाबू शिवप्रसाद गुप्त 1925—1927
डॉ0 सर गंगानाथ झा 1927—1930
डॉ0 नीलरत्न धर 1930—1933
डॉ0 गणेश प्रसाद 1933—1935
डॉ. कर्म नारायण बहल 1935—1938
प्रो0 फूलदेव सहाय वर्मा 1938—1940
डॉ. गोरख प्रसाद 1940—1943
डॉ. श्री रंजन 1943—1951
जस्टिस हरिश्चन्द्र 1951—1957
श्री हीरालाल खन्ना 1957—1960
श्री केशवदेव मालवीय 1960—1967
डॉ. सत्यप्रकाश 1967—69
डॉ. रामधर मिश्र 1967—1969
डॉ. बाबू राम सक्सेना 1969—1975
श्री राम सहाय 1975—1977
प्रो0 कृष्ण जी 1977—1979
डॉ0 रामचरण मेहरोत्रा 1979—1982
डॉ. गोविन्द राम तोशनीवाल 1982—84
डॉ. रामदास तिवारी 1984—1987
डॉ. यशपाल 1987—1989
श्री गजानन्द आर्य 1989—1993
डॉ. श्रीकृष्ण जोशी 1993—1996
डॉ0 दिव्यदर्शन पन्त 1996—1998
डॉ. श्रीमती मंजु शर्मा 1998—2003
डॉ. एम.जी.के. मेनन 2003— अबतक

विज्ञान परिषद के प्रधानमंत्री

प्रो. हमीदुद्दीन साहब 1913—1914
श्री रायबहादुर गौड़ 1914—1915
बाबू रामदास गौड़ 1915—1916
प्रो0 सतीश चन्द्र देव 1916—1926
बाबू श्यामसुन्दर दास 1926—1927
प्रो0 सालिग्राम भार्गव 1927—1935
डॉ0 गोरख प्रसाद 1935—1940
श्री महावीर प्रसाद श्रीवास्तव 1940—1946
डॉ. हीरा लाल दुबे 1946—1949
डॉ. रामदास तिवारी 1949—1957
श्री धमेन्द्र नाथ वर्मा 1957—1959
डॉ. रमेश चन्द्र कपूर 1959—1962
श्री नारायण सिंह परिहार 1962—1964
डॉ. बल्देव बिहारी सक्सेना 1964—1966
डॉ. हीरा लाल निगम 1966—1969
प्रो. वाचस्पति 1969—1972
प्रो. कृष्ण जी 1972—1977
डॉ. शिवगोपाल मिश्र 1977—1987
डॉ. पूर्णचन्द्र गुप्त 1987—1989
डॉ. हनुमान प्रसाद तिवारी 1989—1993
डॉ. देवेन्द्र दत्त नौटियाल 1993—1996
डॉ.शिवगोपाल मिश्र 1996—अब तक

विज्ञान के सम्पादक

श्री धर पाठक तथा लाल सीताराम 1915—1917
प्रो. गोपाल स्वरुप भार्गव 1917—1926
प्रो. ब्रजराज 1926—1927
डॉ. सत्यप्रकाश तथा प्रो. ब्रजराज 1927—1933
श्री रामदास गौड़ 1933—1937
डॉ. सत्य प्रकाश 1937—1941
डॉ. गोरख प्रसाद 1941—1944
डॉ. सन्त प्रसाद टण्डन 1944—1946
डॉ. रामचरण मेहरोत्रा 1947—1949
डॉ. हीरा लाल निगम 1950—1956
डॉ. देवेन्द्र शर्मा 1956—1959
डॉ. शिवगोपाल मिश्र 1959—1971
डॉ. हरिमोहन 1971—1973
डॉ. शिवप्रकाश 1973—1979
डॉ. जगदीश सिंह चौहान 1979—1987
श्री प्रेमचन्द्र श्रीवास्तव 1987—1998
डॉ. दिनेश मणि 1998—1999
डॉ. शिवगोपाल मिश्र 2000—अब तक

अनुसंधान पत्रिका के सम्पादक
स्वामी डॉ. सत्यप्रकाश सरस्वती—संस्थापक संपादक
डॉ. चंद्रिका प्रसाद— प्रधान संपादक
डॉ. शिवगोपाल मिश्र—प्रबंध संपादक

धारावाहिक उपन्यास

'दिल का पैगाम' पर विशेष पत्र

दोस्तो धारावाहिक उपन्यास 'दिल का पैगाम' पर विगत छः माह में हमें कुल पन्द्रह सौ पत्र प्राप्त हुए है. मैने सोचा था कि इन्हें एक साथ प्रकाशित करुंगा लेकिन इतने अधिक पत्र हो जाएंगे इसकी कल्पना मैने नहीं की थी. पाठ्को ने मेरा उत्साह वर्धन किया इसके लिए कोटिशः धन्यबाद. सभी पाठ्को के पत्र अगर मैं छापूँ तो पूरी पत्रिका भर जाएगी. किंतु मैं अपने सम्मानित पाठ्को के दिल को नहीं तोड़ूँगा. उनके समान विचारों वाले पत्रो को मिलाकर सम्मिलित रुप से प्रकाशित किया जा रहा है. इसे भी एक अंक में देना असभंव है.धीरे– धीरे प्रकाशित किया जाएगा. आपके स्नेह के लिए धन्यबाद प्रधान संपादक

धारावाहिक उपन्यास दिल का पैगाम समाज को गलत संदेश दे रहा है

महोदय,

मैं 'विश्व स्नेह समाज' का स्थायी पंच वर्षीय सदस्य हुं. मैनें धारावाहिक उपन्यास 'दिल का पैगाम को पढ़ा. पढ़ने में कुछ चीजें जैसे दहेज का विरोध, प्यार की नई परिभाषा को बताना, प्यार करते हुए अपने कैरियर पर विशेष ध्यान देना तो बहुत अच्छा संदेश देने का माध्यम रहां लेकिन बिना शादी के लड़का–लड़की का घर से बाहर रहना गलत संदेश देना साबित होगा. इससे समाज में लड़के लड़कियों को बिना शादी के घर से भागने की प्रवृत्ति पनप सकती है. खासकर इसके बारे में युवाओ/युवतियों के पत्रो का देखकर तो यहीं कहा जा सकता हैं. कृपया अपनी रचनाएं परोसते वक्त इस बात का विशेष ध्यान दें कि ऐसा कोई संदेश न जाए जिससे समाज में कुछ गलत संदेश जाए. शायद आप इस पत्र को अपनी पत्रिका में प्रकाशित नहीं करें लेकिन मेरा काम था मैने किया. **डॉ. सी.पी. ठाकुर**, कुंडा, प्रतापगढ,**स्वेता पाण्डेय**, गर्ल्स हास्टल, कानपुर, **श्रीमती रीना चौधरी**, बेगूसराय, बिहार, इत्यादि

पिया ना आए

✍गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी
'राही अलबेला'

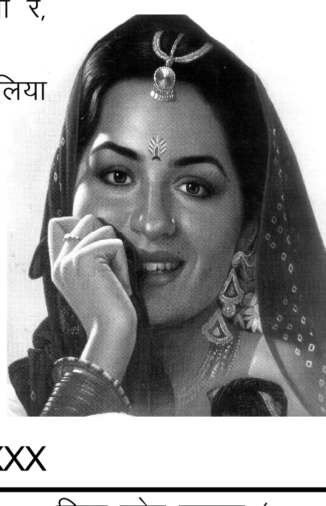

सावन आए; मोर जिया घबराये
कि अबही मोर पिया ना आए सखी रे,
अबही मोर पिया ना आए......
बगियन में चिहूँकी, चिहूँकी बोले कोयलिया
घहरी; घहरी; घहराये बदरिया
जियरा में आग लगाए सखी रे
अबही मोर पिया ना आए ......
सब सखियन के आए रे संवरिया
सब धजके चले ई बुजरिया
सब मिल करके मारे किल करिया
इ देख मोर जिया ललचायें सखी रे
अब ही मोर पिया ना आए.........

XXXXXXXXXXXXXXXXXXXX

अब दिल ही नहीं लगेगा, दिल के पैगाम के बिना

महोदय,

धारावाहिक उपन्यास 'दिल का पैगाम' मैं पहले अंक से ही पढ़ रही हूॅं. अब तक मुझे इस बात के लिए पत्रिका के नये अंक का इंतजार रहता था कि देखे आगे क्या होता है. लेकिन अब तो आपने इसे अंतिम किश्त छापकर छुट्टी पाली. अब तो इंतजार की घड़िया ही नहीं रही. अब तो इसके बिना 'विश्व स्नेह समाज को पढ़ने में दिल ही नहीं लगेगा. वैसे बाकी की भी पढ़ने की ढ़ेरो सामग्री रहती है मगर उपन्यास के बाद ही. आपने बहुत ही अच्छा, काबिले गौर, काबिले तारिफ रचना की हैं. अब तो मेरी बस एक ही तंमन्ना है एक बार दिल के पैगाम के दिल यानी लेखक का दीदार हो जाए. कृपया थोड़ा सा वक्त हम पाठको के लिए निकाल कर आने का कष्ट करें बस आने की सूचना हमें एक हफ्ते पहले दे दें कि ताकि हम लोग अपनी तैयारी कर सकें. हमारी सहेलियों व दोस्तों ने यह निर्णय लिया है कि आपके आने पर हम एक विशेष कार्यक्रम आयोजित कर आपको सम्मानित करेंगे. अगर उपन्यास पूरा छपे तो हमें अवश्य सूचित करने की कृपा करें.

पूजा मिश्रा, आरती सिंह, रेखा तिवारी, सोनी, कविता चौधरी,नेहा मिश्रा, भावना पाण्डेय,इन्दिरा नगर, लखनऊ

कहानी

अंधेरे में उजाला

चंद्र मौलेश्वर प्रसाद

मां के गर्भ में आए हुए मुझे अभी कुछ ही माह हुए थे. यहीं एक ऐसी जगह है जहां पर न तो खाने–पीने की चिंता होती है न ही किसी से हानि पहुंचने की आशंका. कितना सुकून होता है मां की कोख में. अपने शरीर को विकसित करते हुए और सुनहरे संसार में अपने जीवन का शुभारम्भ करने का सुन्दर सपना मन में संजोए हुए मैं अपने दिन गुजार रही थी.

अब मेरा शरीर बढ़ने लगा है और बढ़ते हुए शरीर के साथ संसार देखने की जिज्ञासा भी मन में बढ़ने लगी हैं. कितना सुन्दर होगा यह संसार और कैसी अनुभूति होगी जब सूर्य की पहली किरणें मेरे शरीर पर पड़ेगीं–– न जाने ऐसे कितने अनगिनत प्रश्न मेरे मन में कौतुहल जगा रहे थे.

एक दिन मैंने पिताजी को कहते सुना––"चार महीने हो गए हैं. चलो, कल 'सेक्स डिटर्मिनेशन टेस्ट' करा लें"

हां, मां ने झिझकते हुए पूछा, "अगर फिर लड़की हुई तो......?"

"तो क्या? हमारे लिए सुम्मी ही काफी हैं. हम दो लड़कियों का भार नहीं उठा सकते."

मुझे उनकी बातों का अर्थ तो समझ में नहीं आ रहा था पर मन में कुछ भय उत्पन्न होने लगा. मेरी उत्सुकता पर जैसे शंका के घने बादल मंडराने लगे. पिताजी और मां की बातों का सिलसिला जारी रहा. अब उनकी बातों से अंदाजा होने लगा कि पिताजी को मेरा इस संसार में आना पसंद नहीं है. क्या मैं इस पृथ्वी पर आने के लायक नहीं हूँ? क्या मैं इतनी भारी हूँ कि धरती मेरा बोझ नहीं सह सकती? मेरे मन में एक ओर भयानक विचारों की उथल–पुथल होने लगी तो दूसरी ओर यह भी आशा बंधी कि शायद उनको दया आ जाए और मुझे अपने सपने पूरे करने का अवसर मिले. सोचते–सोचते मैं थक गई. फिर मां की गोद में ममता के थपेड़ों ने मुझे सुला दिया.

मां को दवाखाने ले जाया गया. डाक्टर ने मों को एक बड़े यत्र के सामने रखा.

खट–खट की आवाजें हुई और कुछ अजीब प्रकार की किरणें मेरे बदन को छूती हुई निकल गई. जब तक मैं कुछ समझ सकूँ यह किरणें मेरी आंखों को चकाचौंध करती हुई मेरे कोमल हृदय को व्याकुल कर गई. फिर एक नोकदार सूई मेरे बदन के करीब आकर रुक गई. मैं डर कर सिमट गई. वह सूंई मेरे इर्द–गिर्द घिरे पानी से कुछ खींच कर वापिस चली गई. मैं तो समझी कि यह सूंई मेरे प्राण ही ले लेगी लेकिन मैं बच गई.

पिताजी ने उदास स्वर में मां से कहा–"रिर्पोट आ गई हैं."

मां तो भाप गई, फिर भी आशा के विपरित डरते हुए पूछा–"क्या निकला?"

"निगेटिव"

"अब क्या होगा?"

"मैंने तो पहले ही कह दिया है कि हमारे लिए केवल सुम्मी ही काफी है. हम दो लड़कियों का भार नहीं उठा सकते. हम कल दवाखाने जा रहे हैं."

मां की आंखे डबडबा रही थी पर वह विरोध नहीं कर सकी. उनका विषाद पेट की कम्पन में बदल गया और उस कम्पन से मैं थी थर्रा गई.

रात भर मां बेचैन रही. कभी–कभी पिताजी ढ़ाढस बंधाने के लिए कुछ कहते पर दोनों जानते थे कि वे एक दूसरे को बहलाने के लिए बात कर रहे हैं. मैं भी रात भर आशा और निराशा के पलने में झूलती रही और सोने का प्रयास कर रही थी. जब कोई जीवन और मृत्यु के बीच झूल रहा हो तो वह शांति और चैन से कोसो दूर होता है, भले ही वह मां की कोख में ही महफूज क्यों न हो!

आज शायद मेरे जीवन का अंतिम दिन होगा. डाक्टर मेरी मां की हर प्रकार से जांच करने के बाद 'इबेकुएशन' करने का निश्चय कर चुके हैं.

मैं अपनी मां की गोंद में सिमटते हुए चिल्ला रही थी कि मुझे मरना नहीं हैं. मुझे मौत नहीं जीवन चाहिए.... मुझे भी जीने का हक हैं.... उतना ही जितना मेरे जन्मदाताओं को है. ......मुझे मत मारो....... मुझे बच लो...... मैं किसी पर बोझ नहीं बनूंगी..... मैं अपना जीवन खुद जियूंगी..... क्या लड़की होना जुर्म हैं.......क्या लड़कियां ही ध ारती फिर भी, आशा ही एक ऐसा तिनका होता है **शेष पृष्ठ सं.18पर**

द हंगामा इंडिया

खून के रिश्ते को कलंकित कर दी गुड़िया

viusekSlsjsHkkbZdslkFkvoS/klaca/kesajksM+kcuusijlxh cgu us vius HkkbZ dks izseh ds lkFk feydj ekjk vkSj yk'k dks ckgj QsadvkbZ-

mlds ckn Hkh xqfM+;k ds psgjs ij dksbZ f'kdu ugha gSa-og iwNrkN ds nkSjku eqLdjkrh vkSj 'kekZrh jgha- tsy tkus dk Hkh Mj ugha- viusekSlsjsHkkbZ xksikyds lkFk C;kg jpkus ds ckjs esa iwNus ij og eqLdbjkrs gq, dgrh gSa& gka- og bl nkSjku leksslk vkSj feBkbZ Hkh pko ls [kkrh jgha-

एक घटना से लोग उबर भी नहीं पाते कि खून के रिश्ते को कलंकित करती दूसरी घटना हो जाती हैं. 23 जून, बुधवार को सुबह करेलाबाग में हौली के पास लगभग 26 वर्ष के युवक का शव मिला. कुछ ही देर बाद उसकी पहचान हो गई मृतक विनोद करेलाबाग निवासी राजगीर भगवानदीन निषाद का बेटा था. पोस्टमार्टमं से पता चला कि विनोद की गला दबाकर हत्या की गयी हैं. हत्या के कारण को लेकर पुलिस मशक्कत कर रही थी. घरवालों ने कुछ भी बताने और रिर्पोट लिखाने में दिलचस्पी नहीं ली तो पुलिस को शक हुआ. पुलिस को परिजनों पर ही शक हुआ. विनोद पांच भाईयों में चौथे नंबर पर था. पुलिस छानबीन में पता चला कि विनोद की इकलौती बहन 19 वर्षीया गुड़िया और नैनी के मड़ैका गांव में रहने वाले मौसेरे भाई गोपाल के बीच नाजायज ताल्लुकात हैं गोपाल मुट्ठीगंज में एक बैटरी की दुकान में काम करता था. वह अक्सर करेलाबाग में गुड़िया के पास पहुंच जाता था. दिन में विनोद तथा उसके पिता भगवानदीन के मजदूरी पर निकलने के बाद गुड़िया और गोपाल अकेले में काफी वक्त गुजारते थे. आसपास के लोगों से यह भी मालूम हुआ कि दोनों के अवैध संबंध की भनक लगने पर विनोद ने गुड़िया को कई बार पीटा. उसने गोपाल को भी घर आने से मना किया लेकिन वह नहीं माना और कहता रहा कि वह मौसी से मिलने आता हैं जानकारी मिली कि मंगलवार को भी गोपाल करेलाबाग मे गुड़िया के साथ था. फिलहाल पुलिस के लिए इतना सुराग काफी था. बुद्धवार को पुलिस ने गोपाल को थाने बुलाया और कड़ाई से पूछताछ की. थोड़ी देर आनाकानी के बाद गोपाल टूट गया और हत्या का जूर्म कबूल लिया. इसके बाद पुलिस ने 1 जूलाई को सुबह गुड़िया को पकड़ा और गोपाल के सामने पूछताछ की. उसने भी सच्चाई बता दी. इन दोनों से पूछताछ के बाद एसपी सीटी ने बताया कि मंगलवार 22 जून की शाम गुड़िया की मां रिश्तेदार के घर और पिता–भाई काम पर गए थे. तीनों छोटे भाई घर से दूर खेल रहे थे.तभी गोपाल पहुंचा. इसी दौरान विनोद घर लौटा तो बहन गुड़िया और गोपाल को एक साथ देख गुस्से से भर उठा. पहले तो गोपाल ने भागने का प्रयास किया लेकिन फिर गुड़िया से कहा, रोज–रोज बवाल करता हैं. दोनों विनोद पर टूट पड़े और उसका गला दबाने लगे. नशे में होने के कारण विनोद ज्यादा प्रतिरोध नहीं कर सका.थोड़ी ही देर में उसकी सांस बंद हो गई. लाश को कमरे में छिपाकर गुड़िया और विनोद घर से बाहर जाकर टहलने लगे. रात में मां लौटी तो उसे बताया कि विनोद ने फांसी लगा ली. गोपाल ने गुड़िया की मां को डराया कि लाश घर में रहेगी तो पुलिस हमी लोगों को फंसा देगी. मां की सहमति पर रात में गुड़िया और गोपाल लाश खींचकर कुछ दूर पर हौली के बगल में फेंक आए और गोपाल अपने घर चला गया.

अपने प्रेमी गोपाल के साथ गुड़िया

कहॉनी

fHk[kkjhdksu\

✍जागृति नगरिया

कुलकर्णी ने मण्डप से अपने लड़के को उठाते हुए कहा, "यह शादी हर्गिज नहीं हो सकती." क्या कह रहे हैं आप कुलकर्णीजी, ज़रा मेरी इज्ज़त की भी तो सोचिए, लड़की के पिता ने हाथ जोड़कर कहा. नहीं, मैं ऐसे झूठे और धोखेबाज व्यक्ति की बेटी को अपनी बहू नहीं बना सकता, जिसने शादी तय करने से पहले मुझे कहा कुछ और अब मण्डप के समय अपना रंग बदल लिया.

इधर मण्डप से थोड़ा हटकर बीच शादी के इतना विवाद हो रहा था और उधर दुल्हा–दुल्हन आसमंजस्य में शंशकित से एक दूसरे का मुंह देख रहे थे. विवाह मं आए सभी मेहमानों में भी आपस में काना–फूसी होने लगी थी.

अरे भाई, लगन का मुहुर्त निकला जा रहा है, और आप लोगों की बात खत्म ही नहीं हो रही हैं. पंडित जी तेज स्वर में कुलकर्णी की ओर देखते हुए बोले. तुम चुप रहो पंडित! ये शादी तो अब तभी होगी जब यह दीनदयाल मुझसे किया अपना वादा पूरा करेगा. यह कहकर वह पत्नी से कुछ बात करने लगे. उनके पीछे–2 दीनदयाल और उनकी पत्नी भी आ गए. कुछ तो सोचिए कुलकर्णी जी, मेरी बेटी का क्या होगा, हॉ मैंने आपसे वादा जरुर किया था पर अपनी कोशिश करने के बावजूद भी आपकी मांग पूरा करने में असमर्थ रहा, पर यकीन मानिए मैं 2,4 महीने में वो भी पूरी कर दूॅगा, पर अभी तो यह लगन हो जाने दीजिए. हर्गिज नहीं! अबकी श्रीमती कुलकर्णी आगे बढ़ी. हम तुम जैसे भिखारियों के यहॉ रिश्ता तय नहीं कर सकते. चलो जी बारात वापस लौटा ले चलों. इतना कहकर उन्होंने अपने बेटे को जो अभी कुछ माज़रा भी न समझा था उठाकर कार में बिठा दिया और पूरी बारात उसी क्षण वापस लौट गयी. जिस जगह शादी की शहनाई गूॅज रही थी वहॉ मातम छा गया. जहॉ पवित्र मन्त्रों का जाप हो रहा था वहीं लोगों के कहे–सुने, व ताने गूॅजने लगे. जो दीनदयाल और उसकी पत्नी अपनी बेटी को विदा करने पर रोते वहीं अपनी को विदा न करने पर बिलख–2 कर खून के ऑसू रो रहे थे.

बेचारी दूल्हन! वह तो मण्डप में बैठे–2 यही सोचकर ऑसू बहाती रही कि आखिर में सही मायने में भिखारी था कौन? उसके पिता या वो कुलकर्णी जो अपने हाथों को फैलाये उसके पिता से दहेज की भीख मॉग रहा था. वो भी उसके दरवाजे आकर. आखिर सचमुच कौन था वास्तविक भिखारी?? ❍

---

pan'ksj

जिनकों उस्ताद मिल नहीं पाता
फ़न उन्हें उम्र भर नहीं आता।

––––––––––––––––––––

तुम खेल समझते हो रुबाई कहना
ये काम नहीं दोस्त तुम्हारे बस का
मत बहरे–ख़फ़ीक़ को 'रुबाई'समझो
होते हैं रुबाई के औज़ान जुदा।

'ख़्वाब' अकबराबादी, आगरा

अभी तो इनकी ऑख नहीं खुली
कैसे बता दें–अंगारें कैसे दहकते हैं?

शोभा, आर.जेड.डी / 21ए,
डाबरी एक्सटेंशन, नई दिल्ली–45

हादसे

हादसे हो चुके वतन में बहुत
आगे हों ही नहीं, कोशिशे चाहिए।
हादसों से बढ़े फासले भी बहुत,
फासले अब नहीं फैलना चाहिए।
हादसे की हदें सबने देखी बहुत,
चुप बैठे नहीं तोड़ना चाहिए।
हादसों ने दिया दहशतें भी बहुत,
हाथ मलना नहीं मारना चाहिए।
हादसों में हुई नफरतें हैं बहुत,
कहीं पोसे नहीं मेटना चाहिए।
हादसा वो हठी हिंसाएं की बहुत,
दंगे हों न कहीं सोचना चाहिए।
हादसों ने यहॉ चैन लूटा बहुत,
हाय करना नहीं, षरोकना चाहिए।
हादसों में मिटी हयातें भी बहुत,
होश खोना नहीं, चेतना चाहिए।
हादसा ज्यों गुना मन रोया बहुत,
हाथ जोड़े नहीं फैसला चाहिए।
हादसों में दिखा हठधर्मिता बहुत,
किले हवाई नहीं हथगोले चाहिए।
हादसों से मिला खतरा भी बहुत,
हाथ खींचे नहीं हराना चाहिए।
हादसों से हत हताहत बहुत,
हवा बॉधे नहीं हतना चाहिए।
हादसों को सहा मौना साधा बहुत,
होंठ सिलना नहीं बोलना चाहिए।
हादसों से मिटे सपने भी बहुत,
स्वप्न खोना नहीं देखना चाहिए।
हादसों में हुआ ''रचश्री' जख्मी बहुत
घाव देखें नहीं इनक़लाब चाहिए।

रमेश चन्द्र श्रीवास्तव
एल.आई.यू.,कोतवाली कैम्पस,
फतेहगढ़, 209601

मंजिल से दूर क्यूँ

फूलो की सेज पर सो जाना
किसे नहीं भाता है
मगर फूलों की सेज बिछाना
हर हॅथों को नहीं आता है
मंजिल की तलाश में, निकले थे तान सीना
ठहर गये क्यूँ कदम निकला जब पसीना
मंजिल के रास्ते में कौन,
पत्थरों से नहीं टकराता है
मगर पत्थरों की चोट सह पाना
हर कदमों को नहीं आता है
फूलों की सेज पर सो जाना,
किसे नहीं भाता हैं
मंजिल की एक सीढ़ी तो, चढ़ते ही टुट गई
दूसरी पे कदम बढ़ाया,
तो क्यूं सॉसें सिसक गयी
चढ़ने में सीढ़ियों पे कौन
हिम्मत नहीं जताता है।
मगर सीढ़ियों पे चढ़ जाना
हर सांसो को नहीं आत है।
मंजिल की सहज लकीरे तो,
दीपक सी जग मगायी
रास्तें में आयी ऑधी,
क्यूँ किरणें न रोशनी लायी
अंधेरी रात में दिया कौन नहीं जलाता
मगर ऑधी में दिया जलाना,
हर बाती को नहीं आता
सपनों की मंजिल की कभी,
इक शिला ऊंची खड़ी थी
बिना सोये ही रातों में, उम्मीदें बड़ी–बड़ी थी
सोकर के ऑखों को कौन
सपने नहीं दिखाता
मगर बिन सोये ही स्वप्न दिखाना
हर ऑखों को नहीं आता है।

कु. सुधा मिश्रा
नवरंग संगीत शिक्षा कल्याण समिति, त्रिवेणी नगर, नैनी, इलाहाबाद

xtty

✍गंगा भक्त सिंह "भक्त"

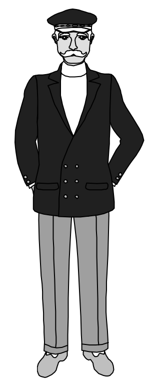

कर्ण के रथ चक्र जैसा रेत में धॅसता गया।
देश प्रगति करके भ्रष्टचार में फॅसता गया।
हमने चाहा था कि हम ईमानदारी से जिएँ।
द्वेष–छल अपना शिकंजा और भी कसता गया।
शांति मन में आई तो दुनिया के सुख आने लगे।
हमने बीराना बसाया और वह बसता गया।
हुस्न के बाजार में कीमत थी दोनों की अलग।
जॉ बहुत मॅहगी बिकी और दिल बहुत सस्ता गया।
एक से एक आये मन कों वश में रखने वाले "भक्त"।
जो हवस का नाग था उन सबको वह डसता गया।

1/100, जाफरी मुहल्ला, देवी प्रसाद का हाता,फतेहगढ़, यू.पी.–209601

geuh ds ekbZ&cki
,xks fgUnqLrku gksAA

हमनी के माई–बाप एगों हिन्दुस्तान हो।।
एके धरतिया जहंवा, एगो आसमानवा,
एके सूरुजवा जहंवा, एकही बा चनवा,
एकही बा संझिया, जहंवा एगो विहाना हो।
हमनी के माई बाप एगो हिन्दुस्तान हो।
कइगों फूल हम, एगो बगिया के,
आपस मे मेल, राखब रगिया के
सिख–ईसाई भाई–भाई, हिन्दू मुस्लमान हो
हमनी के माई–बाप एगो हिन्दुस्तान हो।।
भिन्न–भिन्न भाषा जहंवा, भिन्न–भिन्न धरमवा
बाइबिल गीता एकही, रामायन कुरान हो
हमनी के माई–बाप एगो हिन्दुस्तान हो
एके पवन जहंवा, एके बा पानी,
एके से फूल फरे, कुल्हीं जिनगानी
राम खुदा एकही, यीशु रहमान हो
हमनी के माई–बाप एगो हिन्दुस्तान हो।
नाहीं अलगाई कवनों बागी चौहाान हो।

विद्यानन्द चौबे
ग्राम–गड़वार, पत्रालय–डरैली मठिया, जनपद –सिवान, बिहार

जीवन की सच्चाई

होकर बहुत उदास शहर छोड़ रही है।
सच्चाई रफ्ता–रफ्ता असर छोड़ रही है।
बॅटवारें ने जिस दिन से घर में पॉव पसारे,
हर एक खुशी दीवरों–दर छोड़ रही हैं।।

अशोक अंजुम

अंधेरों में उजाला का शेष....

जो हर डूबने वाले का सहारा हैं. अंत में हर डूबने वाले का आखिरी तिनका होता है उसका ईश्वर.आस्था हो या न हो पर डूबने वाला अंत में उसी तिनके की शरण लेता हैं.

एकाएक मैंने महसूस किया कि चारों ओर अंधेरा हो गया हैं. डाक्टर कह रहे थे, "बिजली न होने के कारण आज वाले सभी आप्रेशन कल किये जाएगें." मैं बच गयी थी. कमाल हैं! अंधेरा भी व्यक्ति को जीवन दे सकता हैं. मैं देर तक इसी विचार में डूबी रही. एक प्रश्न और भी मेरे भीतर उठा था. अगर मुझे जीवन मिल जाए तो मम्मी–पापा से यह सवाल अवश्य करुंगी कि अगर हम नारी भ्रूण को यों ही कुचलते रहे तो कल को पुरुष कौन जन्मेगा?

अंधेरे में मिले जीवन को मैं रातभर जीती रही. अजीब बात हुई. इस अंधेरे में से मम्मी को भी जैसे कोई रोशनी मिली थी. वे पापा से कह रही थी,"मैं रातभर सोचती रही. मेरा मन नहीं मान रहा जी. आज लड़की और लड़के में कोई अन्तर नहीं रह गया. मैं उसे मरने नहीं दूंगी."

यशवंत भवन, अलवाल, सिकंद्राबाद– 500010

कैसे करें एनडीए प्रवेश परीक्षा की तैयारी

एनडीए काम व सुविधाओं के लिहाज से एक बहुत अच्छा कैरियर हैं. यूपीएससी नई दिल्ली की ओर से यह परीक्षा प्रत्येक वर्ष कराई जाती है. राष्ट्रीय सुरक्षा अकादमी की इस परीक्षा में पास होने वालों के लिए सेना, वायुसेना और नेवी के दरवाजे खुल जाते हैं.

एनडीए परीक्षा में दो प्रश्न पत्र आते हैं. पेपर एक में सामान्य योग्यता व ज्ञान संबधी प्रश्न होते हैं. इसमें सामान्य विज्ञान के प्रश्न भी शामिल हैं. कुल 600 अंको का यह प्रश्न पत्र ढ़ाई घंटे का होता है. दूसरा प्रश्न पत्र गणित का होता है. जिसमें दसवीं व बारहवीं स्तर के प्रश्न आते हैं. यह तीन सौं अंको का व ढ़ाई घंटे का होता है. इस परीक्षा में जोर इस बात पर होता है कि परीक्षार्थी की योग्यता के साथ–साथ उसकी कमजोरियों का पता चल सके. इसीलिए आपसे छोटे–छोटे प्रश्न पूछे जाते हैं. अगर आप उनका सही उत्तर देते हैं, तो मान लिया जाता है कि आपको पूरे सिद्धांत की जानकारी हैं. प्रश्न ऐसे पूछे जाते हैं जिनसे पता चल सके कि आप जो जानते हैं, उसका इस्तेमाल कर फायदा उठा सकते हैं या नहीं. इसमें प्रश्नों में ऐसी स्थितियां दी जाती है, जिनका अभ्यास हपले करने को न मिला हो.

तैयारी करते समय यह याद रखें कि पास होने के लिए आपको और लोगों से केवल दशमलव एक फीसदी ही अच्छा प्रर्दशन करना है. एनडीए जैसी परीक्षाओं को पास वहीं लोग कर पाते हैं जो आत्मविश्वास रखते हैं. दृढ़ संकल्प तो जरुरी हैं ही. इस परीक्षा को पास करने के लिए मेहनत, विषय के स्पष्ट ज्ञान और वैज्ञानिक तकनीक की जरुरत भी होती है.

मेहनत जरुरी है लेकिन यह थोड़े अलग तरीके से करनी होगी. आपको दोहराना हीं नहीं होगा बल्कि अभ्यास इस तरह करना होगा कि हर अभ्यास में अपना रिकार्ड खुद ही तोड़ते चलें. लगातार दोहराना ही सबकुछ नहीं होता बल्कि हर बार बेहतर करना ही उसका लक्ष्य होना चाहिए. प्रैक्टिस में परफारमेंस अच्छा करें.

यह परीक्षा याद करने और उसे वैसे का वैसा कागज पर लिख देने जैसी परीक्षाओं से अलग होती है. इसलिए विषय और उसके सिद्धातों की साफ समझ होनी चाहिए. ताकि उसकी मदद से किसी भी नए प्रश्न को हल कर सकें.

इसके बाद है प्रश्न हल करने का वैज्ञानिक तरीका. इसे पांच चरणों में अपनाएं.

स्टेप1– पहले केवल प्रश्न पढ़ें. उत्तर न पढ़ें.

स्टेप2– अब प्रश्न का स्तर समझें. कोई भी प्रश्न तीन स्तरों का होता हैं. एक वो जिसका उत्तर आपकों आता हैं. दूसरा जिसका उत्तर आपको आता ही नहीं हैं. तीसरा वो जो जिसका उत्तर आपको नहीं लेकिन आप उसे पहचान सकते हैं. ऐसे प्रश्नों के उत्तर अलग से याद नहीं होते लेकिन उत्तर के विकल्प देख कर याद आ जाते हैं. ऐसे प्रश्नों को हल करने की कोशिश करनी चाहिए. रिसर्च कहते हैं कि अभ्यास करते समय मस्तिष्क में बनी सही उत्तर की छवि उत्तर ढूढने में मदद करती है.

स्टेप 3– तीसरे प्रकार के प्रश्नों के विकल्प देखें. जो आपके मस्तिष्क की इमेज से मेल न खाते हों, वे गलत होंगे.

स्टेप 4–अब बचे हुए संभावित सही प्रश्न पर ध्यान दें.

लेकिन एक बात है, इस तरीके का अभ्यास किए बिना इसे अपनाना घाटा भी कर सकता है. इसीलिए इसे पहले किसी गाइड के साथ मिल कर प्रैक्टिस कर लें. फिर ही इस्तेमाल करें.

पत्रिका के लिए सम्पर्क करें:

मि0 कमलेश कुमार, नन्दनी बुक सेन्टर बाई का बाग, इलाहाबाद

पापुलर बुक डिपों, इलाहाबाद गर्ल्स डिग्री कॉलेज, कैम्पस, जीरो रोड बस अड्डा के पास, इलाहाबाद

लक्ष्मी बुक हाउस सिविल लाईन्स, इलाहाबाद

सरदार बुक हाउस, बस स्टैण्ड सलेमपुर, देवरिया फोनः 220155, मो. 9415320148

आलोक एजुकेशन बुक सेन्टर भलुवनी, देवरिया, उ.प्र.

जरा हंस दो मेरे भाय

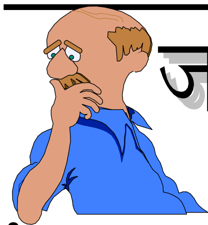

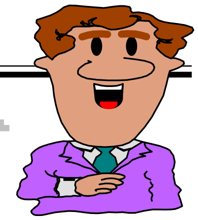

☠ जासूस जब एक व्यक्ति का पीछा करते–करते परेशान हो गया तो उसने सीधे उसी से पूछा लिया कि आखिर वह इतनी रात को एक ही रास्तें पर क्यों घूम रहा है?
व्यक्ति ने जवाब दिया–मुझे घर जाने में देर हो गई है, बीबी को जवाब देना है इसलिए बहाने सोच रहा हूँ।

☠ एक आदमी ने अपने दोस्त की सालगिरह पर तीन सौ रुपये की एक बोलने वाली चिड़िया तोहफे में दी.
पार्टी के तीन–चार दिन बाद वह दोबारा अपने दोस्त से मिले और पूछा–क्यों भई, चिड़िया कैसी लगी?
दोस्त ने जवाब दिया–बहुत अच्छी! लेकिन नमक थोड़ा ज्यादा हो गया था.

☠ प्रेमी–प्रेमिका से–आज के बाद हाथों में मेंहदी मत लगाना, नहीं तो पुलिस पकड़ कर ले जाएगी.
प्रेमिका–पुलिस क्यों पकड़ेगी?
प्रेमी–अखबार में इश्तिहार आया है कि पुलिस रंगे हाथ अपराधी पकड़ना चाहती है

☠ अध्यापक–बच्चों से, पायजामा कौन–सा वचन हैं?
हरभजन–ऊपर से एक वचन और नीचे से बहुवचन.

चौक का दाम अब सिविल लाईन्स में खुल गया कपड़ो का भव्य शो रूम

IVWMsUV~1 VsylZ] 'kxquPkSdchubZ HksaV

लगन कलेक्शन

THE REVISIT SHOP

Raymond

मीना बाजार के सामने, सेल्स टेक्स आफिस के नीचे सिविल लाईन्स, इलाहाबाद

फोन : 2608082

☠ नेता–डॉक्टर से–मेरी रिर्पोट को मेरी भाषा में समझाएं.
डॉक्टर–रिर्पोट के मुताबिक आपका ब्लड प्रेशर घोटालों की तरह बढ़ गया हैं, फेफड़े झूठे आश्वासन दे रहे हैं तथा दिल त्याग पत्र देने वाला है.

☠ अध्यापक–बच्चों, बिना दांत वाले दो जंतुओं के नाम बताओं?
छात्र–महाशय, दादा और दादीजी

☠ राजू–रोहित से–हम पानी क्यों पीते हैं?
रोहित–क्योंकि हम इसे खा नहीं सकते.

☠ मां–बेटे से– तुमने यह पत्र लेटर बॉक्स में क्यों नहीं डाला?
बेटा–मां, मैं सुबह से शाम तक इधर–उधर घूमता रहा, पर शहर के सभी लेटर बॉक्स में ताले लगे हुए थे. फिर मैं कैसे पत्र डालता?

इस स्तम्भ में आप भी अपने पंसद के स्वरचित चुटकुलें भेज सकते है। अच्छे चुटकुलों को प्रकाशित कर पुरस्कृत भी किया जाएगा।

साहित्य श्री तथा समाज श्री–२००४ हेतु प्रविष्टियाँ आमंत्रित हैं

हिन्दी मासिक पत्रिका "विश्व स्नेह समाज" ने जी.पी.एफ.सोसायटी के सहयोग से इस वर्ष रचनाकारों व समाज सेवियों को प्रोत्साहित करने हेतु साहित्य श्री व समाज श्री से सम्मानित करने का निर्णय लिया हैं. इसमें 5000/–रुपये का नगद पुरस्कार व प्रमाण–पत्र तथा 10 रचनाकारों व समाजसेवियों को अन्य सम्मानों से सम्मानित करने का निर्णय लिया हैं.
इसमें रचनाकारों से फोटो, परिचय सहित अपनी पंसद की कोई भी दस कविता/ग़ज़ल/कहानियॉ/लेख मौलिकता के प्रमाण–पत्र के साथ आमंत्रित करता हैं तथा समाज सेवियें से भी फोटो, परिचय सहित समाज सेवा में विगत पॉच वर्षो में किये गये योगदान की विस्तृत रिर्पोट सहित आमंत्रित करता हैं प्रवेशियों को स्टेशनरी, डाकव्यय सहित 100रुपये प्रवेश शुल्क अपेक्षित है. शुल्क मनिआर्डर/डिमांड ड्राफ्ट 'विश्व स्नेह समाज' के नाम से देय होगा. अपनी प्रविष्टिया **हमें निम्न पते पर भेजें:–**
सम्पादक, मासिक पत्रिका 'विश्व स्नेह समाज', एल.आई.जी–93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद

औषधीय गुण भी हैं घरेलू सब्जियों में

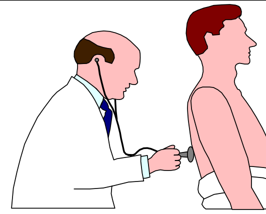

गतांक से आगे–

प्याज–कई प्रकार के औषधीय गुणों वाला प्याज हैजा और डारिया में तो गुणकारी है ही, प्याज के रस को शहद के साथ लेने से नपुंसकता दूर होती है. कंडे की आग में प्याज को पकाकर, उसे पीसकर लुगदी के रुप में लगाने से फोड़े ठीक हो जाते हैं. नजला में प्याज काटकर सूँघने से राहत मिलती है. गर्मी और लू से तो प्याज राहत देता ही हैं. बेहोशी और मिरगी में भी प्याज के रस का लेप करने से जलन में राहत मिलती है. कान के दर्द में भी प्याज का रस हल्का गुनगुना कर डाला जाता है.

अदरख– भूख बढ़ाने, पाचन–तंत्र को व्यवस्थित करने, खॉसी, दमा गठिया, अफारा, पेटदर्द आदि में अदरख का उपयोग अत्यन्त गुणकारी है. सूखी अदरख को सोंठ कहा जाता है. बलगम को खत्म करने में अदरख बहुत ही कारगर होती है.

गाजर– पाचन शक्ति को बढ़ाकर, शरीर की रोग–प्रतिरोध क्षमता को बढ़ाने में गाजर का महत्वपूर्ण योगदान है. इसमें विटामिन ए की बहुतायत होती है. यह ऑखों के लिए गुणकारी और त्वचा को साफ करती है.

धनियॉ–तासीर में शीतल धनिया पित्त को नियंत्रित करता है. पेट के समस्त विकारों और अम्ल पित्त में यह बहुत गुणकारी है. यह अनिद्रा नाशक, भूख बढ़ाने वाला, सभी प्रकार के शिरोव्यथा में लाभदायक है.

लहसुन– गले की खराश, सामान्य पक्षाघात, दमा और दर्द तथा अनेक प्रकार के चर्म रोगों में लहसुन लाभदायक है

स्वास्थ्य समस्याएं

डॉ.श्रीमती पी. दूबे

प्रश्नः मेरी शादी को तीन साल हो गए हैं. बच्चा नहीं हुआ. हमारे सेक्स संबंध नियमित हैं और हमने कभी कोई गर्भनिरोधक भी इस्तेमाल नहीं किया. पति ट्रक ड्राइवर हैं. अब मैं मां बनना चाहती हूं. रेखा, तिवारीपुर, गोरखपुर

उत्तरः शादी के एक साल तक बिना किसी गर्भनिरोधक साधन को अपनाएं सेक्स करने पर भी यदि गर्भ नहीं ठहरता है, तो डॉक्टर को दिखांए. मानसिक रूप से तनावग्रस्त रहने और शराब का सेवन करने से पति बांझपन का शिकार हो सकते हैं. आप अपन चेकअप कराएं और अपने आहार में लौह व खनिज तत्व, हरी सब्जियां, दूध इत्यादि शामिल करें. कुपोषण की शिकार होने पर भी उर्वरता प्रभावित होती है. संतुलित आहार व विटामिन की गोलियां ले कर आप उर्वरता हासिल कर सकती हैं. वैसे दवाएं डॉक्टर की सलाह पर ही लें. माहवारी के बाद के दिनों में गर्भ ठहरने की संभावना ज्यादा रहती है, उन दिनों सहवास करें.

प्रश्नः मेरी उम्र बीस साल हैं. दो बच्चों की मां हूं. दो साल से मेरे सारे बदन और घुटनों में बहुत दर्द रहता है. कहीं मुझे ऑस्टियोपोरोसिस तो नहीं हो गया है? राधा, बिजनौर

उत्तरः इस उम्र में हड्डियों की कमजोरी या ऑस्टियोपोरोसिस की संभावना तो नहीं लगती. सारे बदन और घुटनों में दर्द होने की वजह कोई और हो सकती है. आपने यह नहीं बताया कि आपके बच्चे कितने बड़े हैं? क्या छोटे बच्चे को स्तनपान करवा रही है? आप एक बार डॉक्टर को दिखाएं, वे जांच करके इलाज बताएंगे. वैसे आप अपने खानपान की ओर ध्यान दें और पूरा आराम भी करें.

प्रश्न : मेरी उम्र 40 साल है. इधर कुछ महीनों से मासिक स्राव कम आता है. पहले पांच दिनों तक आता था, अब तीन या दो दिन ही आता था, अब तीन या दो दिन ही आता है. क्या यह रजानिवृति करीब आने के लक्षण हैं? विधा,सहारनपुर

उत्तर– इस उम्र में मासिक स्राव कम आना रजोनिवृति करीब आने के लक्षण हैं. आप परेशान ना हों. स्त्री रोग विशेषज्ञ को दिखाएं, वे आपको इस बारे में सही जानकारी देंगी. अपने खानपान का विशेष ख्याल रखें. संतुलित आहार लें. दूध जरूर लें. खूब सलाद और हरी सब्जियां लें. इस दौरान शरीर में इस्ट्रोजन की मात्रा कम होने से हड्डियों पर असर पड़ता है. हल्का–फुल्का व्यायाम करें.

प्रश्नः हाल ही मेंरा बेटा हुआ है. अभी वह मेरा ही दूध पीता है, ऊपर का शुरू नहीं किया. मैं पहले गर्भनिरोधक गोलियां लेती थी. क्या अब भी ये गोलियां ले सकती हूं? प्रिया, मुजफ्फरनगर

उत्तरः आप गर्भनिरोधक गोलियो का सेवन ना करें. स्तनपान करानेवाली महिलाओं के लिए इन गोलियों का सेवन उचित नहीं है. इससे बेहतर हैं आप टुडे गोलियों और आपके पति कंडोम का इस्तेमाल करें. वैसे गर्भनिरोध का सबसे उचित तरीका कॉपर टी है. यह काफी कारगर हैं.

इस स्तंभ के लिए पाठक अपनी समस्याएं भेजते समय डाक्टरी परीक्षण, केस हिस्टरी व अन्य आवश्यक ब्योरा दें. समस्याओं के हल केवल पत्रिका में प्रकाशित किए जाएंगे. पत्र इस पते पर भेजें: स्वास्थ्य समस्याएं, एल.आई.जी–93, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद

कहानी

आखिरी मुकाम

श्रीमती अनीता चौहान

तुम एक कवारें लड़के हो और मैं... किसी की त्यागी हुई, किसी की छोड़ी हुई झूठन हूँ. इसके सिवा इस वक्त मेरा कोई अस्तीत्व नहीं है. मेरा जिस्म भी तुम्हारे योग्य नहीं रहा. ये मिलन न पहले सम्भव था न अब सम्भव हैं.

जिस रास्ते की कोई मंजिल न हो मैंने उस रास्तें पर चलना उचित नहीं समझा. कुछ समय में तो वो शादी हो ही गई थी. और मेरे मन में तुम्हारा ख्याल जाने लगा. लेकिन दहेज का तराजू मेरे भार को उठा नहीं पाया. मेरा सौन्दर्य और मेरे संस्कार नोटो की कमी को पूरा कर पायें. और आज...आज भी ये मुमकिन नहीं है. तुम एक कवारें लड़के हो और मैं... किसी की त्यागी हुई, किसी की छोड़ी हुई झूठन हूँ. इसके सिवा इस वक्त मेरा कोई अस्तीत्व नहीं है. मेरा जिस्म भी तुम्हारे योग्य नहीं रहा. ये मिलन न पहले सम्भव था न अब सम्भव हैं. इतना कह आकांक्षा फूट–फूट कर रो पड़ती है. विजय आकांक्षा को बॉहों में कस लेता है और कहता है–"पगली प्यार दो मनों का मिलन है तनों का नहीं. मन तो मैला हो सकता है लेकिन मन नहीं. मैंने मन से तुम्हें चाहा है. मेरे लिये तुम वही हो जो पहले थी. और रहा समाज का सवाल तो हम समाज के कारण अपने आप से अन्याय क्यों करें. मेरी नजर में तुम मेरी चाहत और जरुरत हों आकांक्षा."

"विजय मैं भी सिर्फ उसी दिल को चाहती हूँ जिसे मेरी जरुरत हो. लेकिन मैं क्या करूँ."

"मेरे लिए सिक्कों की झंकार से ज्यादा मायने रखती तुम्हारी पायल की आवाज."

"मेरा जीवन तो बर्बाद हो चुका है. लेकिन अपने कारण दूसरों को दुख देना नहीं चाहती. मेरे कारण दो परिवारों पर कोई ऊँगली उठाये. ये मुझसे सहन नही होगा फिर भी तुम कुछ समय इन्तजार करों."

दो मनों के मिलन में रात जल्दी ही निकल गयी.

आकांक्षा अपने दिल की बात अपनी सहेली कंचन से नहीं छुपाती थी. उसने अपने और विजय के बारे में कंचन को बताया. कंचन एक सुलझे दिमाग की समझदार लड़की है. किसी भी कार्य में जल्द बादी पंसद नहीं करती.उसने आकांक्षा से कहा–"दूध का जला छांछ फूक–फूक कर पीता. विजय का तुम्हारी ओर झुकाव है. कोई वो दया या हमदर्दी तो नहीं. कल इस फैसले पर विजय को पछतावा तो नहीं होगा. तू जिसे प्यार समझ रही हैं वो सिर्फ आर्कषण तो नहीं. या फिर ये भी तो हो सकता है कि विजय जिसे प्यार समझ रहा है वो प्यार ही न हो. आकांक्षा ये तेरी जिन्दगी का सवाल हैं. छोड़ी हुई लड़की का भार सहन कर पायेगा. घर गृहस्थी की जिम्मेदारी में अक्सर पुरुषों के प्यार फीके पड़ जाते हैं. इसलिए विजय को दिल से ज्यादा दिमाग से सोचना चाहिए और तूझे भी. आकांक्षा तेरे परिवार को एक सदमा पहुँच चुका हैं. तू किसी नये जख्म की वजह तो नहीं बन जाएगी.

"नहीं....नहीं कंचन ऐसा मत बोल. मैं तो अपने आपसे ही दुखी हो चुकी हूँ. किसी और को क्या दुख दूंगी. लेकिन इतना सोच कि सारी उम्र तो इस घर में रह नहीं सकती. मॉ, पिताजी भी दूसरी शादी ही करना चाहेंगे. किसी और को मंजूर करने से अच्छा तो यही होगा कि मैं उसे स्वीकार कर लूं जिसकी नजर में मेरे लिए प्रेम और विश्वास हो. मेरे और विजय के संबंध को हमारे माता–पिता का आशीर्वाद मिलें."

"तू जो सोच रही है. वो नामुमकिन तो नहीं हैं. फिर भी....? तुझे अपने मॉ–बाप के अन्तरमन को जान लेना चाहिए."

"तू बता कंचन, तेरा दिल क्या कहता हैं. आकांक्षा बात सिर्फ दिल की नही हैं. सवाल तो ये है कि जिस लड़की की दहेज के कारण शादी खत्म हो गयी है. अगर उसी लड़की को बिना दहेज के किसी अन्य जाति का लड़का अपनाना चाहे तो क्या उचित होगा. मैं तो मानती हूँ कि युगो से जो आज तक समाज में परिवर्तन हुए है वो मनुष्य ने ही किये हैं. तो आज क्यू नहीं. किसी भी काम के लिए पहला कदम बढ़ाने वाला कोई एक ही होता हैं. वैसे दुनिया में कितने लोग अपने प्रेम संबंध बचाने के लिए जाति भेद की दीवार तोड़ देते हैं. कुछ दिनों के चर्चे के बाद सब शांत हो जाते हैं. तू चिंता मत कर तेरी मम्मी क्या सोचती हैं, ये बात तो पता कर हीं लेंगे और विजय के दिल की भी ले लेनी चाहिए. आज के युग में किसके

के मन में क्या चल रहा है ये जानना आसान नहीं हैं."

समय बीतता रहा... एक दिन कंचन विजय से बोली—

"अरे....तू कहीं पागल तो नहीं हो गया. तुझे अच्छी खासी लड़की मिलेगी. वो भी दहेज के साथ फिर तू उस सेकेण्ड हैंड माल के पीछे पड़ रहा हैं. पहना कपड़ा मैला होता हैं. स्वच्छ नहीं विजय."

विजय जोर से चिल्ला कर कहता है "कंचन अपनी जुबान बंद रख."

"अरे वाह..! मेरे कहने पर ही इतना गुस्सा कल तो सारी दुनिया कहेंगी. तब किस—किस की जुबान बंद करेगा."

"सारी दुनिया उसकी सहेली नहीं है. तू तो उसकी सहेली हैं."

"मैं तो तेरी भी दोस्त हूँ. इस कारण तो सच्ची बात कह रही हूँ."

"अच्छा जा तू यहां सें."

फिर कंचन आकांक्षा के घर मिठाई का डब्बा लेकर आती हैं.

"नमस्तें अंकल, आंटी. मिठाई खाईए. अग्रवाल जी मिठाई खाते हुए बोलते हैं "किस खुशी की मिठाई है."

"मेरी एक सहेली ने शादी की हैं लव मैरिज...."

"क्या...?"

"अंकल लड़के में कोई कमी नहीं हैं."

"दोनों के मां—बाप की मरजी के खिलाफ..."

"अब वो भी क्या करते... बस इतनी ही बात थी कि दोनों की जात अलग हैं. लड़की ठाकुर जात की हैं और लड़का कुम्हार जात का."

इतना सुनकर मिसेज अग्रवाल बोल पड़ती हैं—"क्या ठाकुर लड़के मिट गये हैं. जो नीच जात में चली गई और तू ऐसी की मिठाई हमें खिला रही हैं. अरे अब उनको कौन लड़की देगा और कौन उनकी बेटियों को लेगा. इतनी जवानी फट रही थी तो अपने आपको खत्म कर लिया होता अग्रवाल जी बीच में ही बोल पड़ते हैं—"तू चुप रह. किसी बात का कोई तो ढंग होता है. कंचन, पछतायेगे वो दोनों. शादी ब्याह कोई खेल नहीं हैं."

"अंकल जी वैसे ये बात कहना उचित तो नहीं हैं. लेकिन आप एक बात बताइए जो काम उसके मां—बाप और समाज कर रहा था क्या वो खेल नहीं था. बिना अपनी बेटी की मर्जी जाने उसकी सगाई कर दी जब घर—बार देखकर उन्हें लगा की मनचाहा दहेज नहीं मिलेगा तो कमी न होते हुए भी लड़की में दोष निकाल दिया. क्या वो ऊँ जाति वाले थे. जाति के नाम पर अपनी औलाद का गला घोटनें वाले अच्छे लोग होते हैं."

कंचन इतना कहकर उठकर चली जाती हैं.

आकांक्षा अपने मां—बाप की रायसुनकर चुपचाप जाकर राने लगती हैं. आखिर वो भी तो एक छोटी जाति के लड़के की संगीनी बनना चाहती थी. आकांक्षा के मन पर विजय पूरी तरह हावी था. उसका दिल यही कहता था कि यदि कोई उसके जीवन में दुबारा आ सकता है तो वो है विजय. अगर उसकी जीवन रुपी नौका का कोई खेवनहार हो सकता है तो सिर्फ और सिर्फ विजय.... और अब आकांक्षा विजय के प्यार को खोना नहीं चाहती. समाज तो सघर्ष कर सकती हैं लेकिन माता—पिता के सामने टूट जायेगी.

मुहब्बत का खजाना छिपाने को जगह नही मिलती. एक न एक दिन पता चल ही जाता हैं जमाने कों और वो दिन भी आ ही गया. आकांक्षा पर बूरी तरह गालियों की बौछार पड़ने लगी.

"रंडी, कुतिया, मर जाती तो अच्छा था. अरे... वही नीच मिला था तुझे मुॅह काला करने कों."

आकांक्षा के अश्क बहने लगे. लेकिन गालियों के शब्दों का कोष खत्म न हुआ. अरे, जब सबको पता चलेगा तब क्या होगा. कौन हमारे घर से बेटी लेगा और इस घर को लक्ष्मी देगा. डाइन, उस घर को तो खा आई इस घर को भी निगल लें. इतनी ही आग थी तो क्यू भाग आई. हमारी नाक कटाने. क्या मिलेगा तुझे. इतना अपमान सह आकांक्षा चीख पड़ती हैं. बस मां, अब और कुछ मत कहों. मैं जानती हूँ मैं तुझ पर बोझ बन गयी हूँ. इतना मजबूर मत करो कि मैं जीना ही छोड़ दू. अरे जिसका अपना कोई घर न हो या वो किसी और क्या घर बर्बाद करेगी.... आकांक्षा रोते हुए बोले जा रही थी मां विजय नीज जाति का नहीं है नीच तो तुम्होर और तुम्हारे समझ के विचार है जो हमें एक दूसरे का सहारा बनने से रोकता हैं. क्या नाक काटी है तेरी. बरसों से विजय को चाहने के बाद भी तन्हाई का दर्द सह रही हूँ. सबके होते हुए भी हमेशा अकेली हूँ. वो घर उसका था जिसने दौलत के लिए धक्के मार कर निकाल दिया और ये घर तेरा हैं. तो मेरा घर कहॉ हैं बताओं कोई मुझे मेरा घर कहॉ हैं........अगर मैं विजय के घर को अपना बनाना चाहती हूं तो क्या बुरा चाहती हूँ. आज मेरे ओर विजय के रिश्ते को गाली देकर आपने साबित कर दिया कि मुझे इस घर में वापस आना ही नहीं चाहिए था. मैंने तुम्हारे घर का बुरा

न तो चाहा था न चाहूँगी. कुछ दिनों का समय और दे दों अपने साये से तुम्हारे घर को मुक्त कर दुंगी.
बिलकती हुई आकांक्षा कि बाते सुन आकांक्षा की मॉ की ऑखों से भी पानी बहने लगें.
अगर मेरे जीवन का अकेलापन तुम्हारे अपनो की महफिल सजा सकता है तो सजा लो मॉ. तुम मां होकर भी मेरे दिल के दर्द को समझ नहीं सकी. मैं अपने आप कफन डाल ही लूंगी. और रहा विजय का सवाल तो वो तो पुरुष है एक न एक दिन मुझे भूल ही जाएगा. लम्बी सांस लेते हुए आकांक्षा ने अपने आंसू पोछ लिये. शायद, इत्फाक से विजय ने कुछ बाते बाहर खड़े होकर सुन ली थी. वह बहुत ही तेजी और क्रोध भाव से घर के भीतर घुस आया. आकर तुरंत बोला."क्यों भूल जाउं मैं तुम्हें, बोलों आकांक्षा. क्योंकि तुम्हारे मां–बापं मुझे पंसद नहीं करते. या फिर समाज हम दोनों के रिस्ते को स्वीकार नहीं करेगा. आकांक्षा ने अपने दिल की बात स्वीकार करली तो आज आपकी नाक क्यों कट रही हैं. आज आपको सबका ख्याल आ रहा हैं. उस वक्त आपकी नाक क्यों नही कटी जब इसे सताया जा रहा था. उस वक्त कहॉ गये थे वो भाई, बहन जब इसे जानवरों की तरह पीटा जा रहा था. इसके बदन को छलनी कर दिया तब आपके समाज ने कोई सवाल नहीं किया."
"विजय तुम मत बोलों, जाओं यहां सें"
"आकांक्षा तुम चुप रहों. मैं आंटी से बात कर रहा हुं. आंटी आप अपने इन रुढीवादी विचारों के कारण क या अन्याय कर रही हैं और आप मुझे नीच कहती हैं. मैं तो आपकी ठुकराई हुई बेटी का इज्जत से हाथ थामना चाहता हूँ. आकांक्षा तुम आज, अभी मेरे साथ चलों. मैं तुमसे शादी करुंगा...चलो."
"नहीं विजय......जिसके अंजाम से मेरे अपनों को दुख मिले वह कार्य मैं नहीं करना चाहती. और यह भी सच है कि तुम्हें उम्र भर के लिए पा न सकी तो भूला भी न सकूंगी

गरदिश की इस घड़ी में,
बन जाये कोई सहारा।
हैं भवर में नईया,
मिल जाये कहीं किनारा.

प्रिय पाठकों, जीवन की राह पर चलते–चलते मनुष्य कभी–कभी ऐसे चौराहे पर आ खड़ा होता है जहॉ से उसे अपने लिए एह राह चुननी होती है. जब राह का सही पता न हो तो चुनाव बहुत कठिन हो जाता है. इन राहों में उसे अपनी उस राह को चुनना होता है जो उसके मुकाम तक जाती हों.
कुछ लोगों के लिए वहीं मुकाम **आखिरी मुकाम होता हैं.**

सिर्फ आखिरी मुकाम

हमारी इस कहॉनी के पात्र भी ऐसे ही चौराहे पर खड़े हैं जहॉ उन्हें अपने मुकाम की राह को चुनना हैं. हम चाहते हैं कि सही रास्ता चुनने में आप उनकी मदद करें. अपने सुझाव हमें पत्रिका के पते पर अवश्य भेजें.

मंहगाई अत्याचारी और भुखमरी

हॉय राम जब से आयी कमर तोड़ ये मंहगाई।
कर गयी गरीबों को बुरी तरहसे रूसवाई।।
`गेहूँ मंहगा, चावल मंहगा, मंहगी हुई है दाल।
कुछ मत पूछिये भइया, सब्जी का क्या है हाल।।
गरीबों की सुनती नहीं है अपनी ये सरकार।
हो रहा हम गरीबों पर क्या खूब अत्याचार।।
प्राईवेट फर्म में वेतन नहीं बढ़ता मंहगाई तेजी से बढ़ती।
समझ में नहीं आता, रही कौन सी चीज अब सस्ती।।
वेतन मिले सही तब तो हर चीज है सस्ती।
डूबती गरीब की नइया, मिलती नहींहै किस्ती।।
सरकार कभी सोचती नहीं हम गरीबों के बारें में।
देश को बरबाद कर डाला देश के ही गद्दारों ने।।
बिना पैसे और सोर्स सिफारिस के हर डिग्री बेकार है।
जिसके पास पैसा हो उसकी ही आज सरकार है।।
मंहगाई में चलती कैसे घर और गृहस्थी है।
मालुम क्या भइया जिनके पास दौलत बरसती है।।

दर्दे दिल राज

श्री राधे टेक्सटाइल्स, 67/78, हीवेट रोड, विवेकानन्द मार्ग, इलाहाबाद

वक्त का क्या है, गुजर जायेगा,
उसकी रफ्तार से डर लगता है।
बलवीर सिंह 'रँग'

ज्योतिष क्या है–2

ज्योतिष शास्त्र के तीन विषय है

अंजना अग्रवाल
नवभारती पब्लिक स्कूल, दारागंज, इलाहाबाद

ज्योतिष शास्त्र के तीन विषय है

1. सिद्वात–सिद्धांत ज्योतिष के अर्न्तगत सूर्यादि ग्रहों एवं नक्षत्रों की स्थिति निर्धारण करने के तरीके का अध्ययन किया जाता है. इसमें खलोलीय परिवर्तन का अध्ययन किया जाता है.

2. होरा– होरा का शब्दिक अर्थ है समय की गणना. प्रत्येक मनुष्य की जन्मकुंडली के द्वारा ही हम इस बात को बता सकते हैं कि अमुक व्यक्ति कैसा होगा, उसके स्वभाव की क या विशेषतायें होगी. उसकी आयु, स्वास्थ्य, आर्थिक स्थिति, चारित्रिक विशेषताओं, विवाह, संतान उन्नति, अवनति आदि अन्य सभी बातों का निर्धारण हम होराशास्त्र द्वारा ही कर सकते हैं.

3. संहिता–संहिता के अध्ययन द्वारा हम नक्षत्रों की सिथिति एवं उनमें होने वाले परिवर्तन एवं मौसम खेती, उपज, ऑधी, तूॅफान राजनैतिक परिवर्तन आदि का ज्ञान प्राप्त कर लेते हें.

आज हम ज्योतिष श्रृंखला माला के अर्न्तगत नक्षत्र का ज्ञान प्राप्त करेंगे. नक्षत्र शब्द सस्कृत भाषा का शब्द है. इसका शाब्दिक अर्थ है–न हिलने वाला, न चलने वाला (न क्षरति न सरति इति नक्षत्रः)

वास्तव में नक्षत्र उन तारा समूहों को कहते हैं जो हमें रात्रि में आकाश में दिखते हैं किन्तु ये अनगिनत हैं. अतः हम यहां केवल उन्हीं 27 नक्षत्रों की चर्चा करेंगे जिनका फल एवं प्रभाव हम ज्योतिष शास्त्र में पाते हैं. नीचे सत्ताईस नक्षत्रों के नाम स्वामी ग्रहो के साथ वर्णित है–

नक्षत्र			स्वामी
1. अश्विनी	10. मघा	19. मूल	केतु
2. भरणी	11. पूर्वफाल्गुनी	20. पूर्वाषाढ़ा	शुक्र
3. कृतिका	12. उत्तराफाल्गुनी	21. उत्तराषाढ़	सूर्य
4. रोहिनी	13. हस्त	22. श्रावण	चन्द्र
5. मृगशिरा	14. चित्रा	23. घनिष्ठा	मंगल
6. आर्द्रा	15. स्वाति	24. शतभिषा	राहु
7. पुनर्वसु	16. विशाखा	25. पूर्वाभाद्रपद	गुरु
8. पुष्य	17. अनुराधा	26. उत्तराभाद्र पद	शनि
9. आश्लेण	18. ज्येष्ठा	27. रेवती	बुध

नक्षत्रों के गुणधर्म के अनुसार उनको निम्न संज्ञाओं के अन्तर्गत विभाजित करते हैं साथ ही यहां नक्षत्र संबंधी योग भी बताये जा रहे हैं–

1. ध्रुव संज्ञक नक्षत्र–मुहुर्त चिन्तामणि के अनुसार, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद, रोहिणी और रविवार स्थिर और ध्रुव संज्ञक है. इनमें बहुत समय तक स्थिर रहने वाले कार्य जैसे मकान का आरम्भ, बीच बोना, ग्रहो आदि की शांति, बागीचा लगाना आदि कार्य शुभ होता है.

2. चर संज्ञक नक्षत्र– स्वाती, पुनर्वसु, श्रवण, घन्ष्ठिा, शतभिषा और सोमवार में ये चर और चल संज्ञा वाले शब्द हैं. इनमें यात्रा करना, सवारी करना आदि शुभ होता है.

3. उग्र संज्ञक नक्षत्र– पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा, पूर्वाभाद्रपद, भरणी, मघा, और मंगलवार ये उग्र एवं क्रूर नक्षत्र आदि हैं. इनमें विषादि का प्रयोग, शस्त्र बनाना, युद्व आदि करने से कार्य में सफलता प्राप्त होती है.

4. 'मिश्र' संज्ञा वाले नक्षत्र– विशाखा, कृतिका और बुधवार ये मिश्र और साधारण संज्ञा वाले हैं. इनमें यज्ञ संबंधी कार्य यज्ञ आदि मिश्रित कार्य करने से सफलता मिलती हैं.

5. क्षिप्र और लघु संज्ञा वाले नक्षत्र– हस्त, अश्विनी, पुण्य, अभिजित और गुंरुवार क्षिप्र एवं लधु संज्ञक हैं. इनमें दुकानदारी की आरम्भ रतिकर्म, शास्त्र अध्ययन, आभूषण निर्माण, दस्तकारी एवं अन्य कला संबंधी कार्य सिद्ध होते हैं.

6. मृदु संज्ञक नक्षत्र–मृगशिरा, खेती, चित्रा, अनुराधा और शुक्रवार ये मृदु और मैत्र संज्ञक हैं. इनमें गायन, उत्सव, नवीन वस्त्र धारण करना, खेलकूद एवं मैत्री संबंधी कार्य सिद्ध होता हैं.

7. तीक्ष्ण एवं दारुण संज्ञक नक्षत्र–मूल, ज्येष्ठा, आर्द्रा, आश्लेषा और शनिवार ये तीक्ष्ण एवं दारुण संज्ञक हैं. इनमें मारण आदि तान्त्रिक प्रयोग, शस्त्रादि प्रयोग, फूट आदि पशु संबंधी कार्य सिद्ध होते हैं.

8. ऊर्ध्वमुख अधोमुख और तिर्यडमुख नक्षत्र– मूल, आश्लेषा, कृतिका, विशाखा, **शेष पृष्ठ 29 पर....**

is'kkc vkxs dh vksj >qddj djuk pkfg,

सिडनी. एक आस्ट्रेलियाई विज्ञानी ने लघुशंका का सही तरीका ढूंढ लेने का दावा किया है. ये पुरुषों और महिलाओं दोनों पर लागू होते हैं. द जेम्स कुक यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर अजय राने का कहना है कि पेशाब करते समय लोगों को आगे की ओर झुककर दोनों हाथ घुटनों पर रखना चाहिए.

इससे मुत्राशय ठीक ढंग से काम करता है और कमजोर नहीं होता. आगे की ओर झुककर कुहनी को घुटनों पर टिकाकर ऐसे बैठे, जैसे लगे कि आप जमीन पर बैठकर अखबार पढ़ रहे हैं. इस प्रकार बैठकर मूत्र त्याग करना मूत्राशय और आंतो के सही ढंग से काम करने के जरुरी है.

प्रोफेसर राने का मानना है कि पेशाब करते समय स्थिर नहीं रहने से एक तिहाई मूत्र ही मूत्राशय से बाहर आ पाता है. फिलहाल प्रोफेसर राने मल त्याग की सही विधि पर अध्ययन करने में जुटे हुए है.

vuks[ks lsDl f'k{kk dsaUnz

कोलंबो. दुनिया के तकरीबन सभी देशों में किशोरों को सेक्स शिक्षा देने के लिए अभियान चलाया जा रहा है. श्रीलंका सरकार हाईस्कूलों में सेक्स शिक्षा को बढ़ावा दे रही है, लेकिन अधिकतर शिक्षकों को इसके बारे में कुछ ज्यादा जानकारी नहीं है. किशोरों के जिज्ञासु प्रश्नों के जवाब देने या उन पर टिप्पणी करने से शिक्षक बचते हैं. यहां यूथ सेक्सुअल हेल्थ सेंटर में युवक और युवतियों के सेक्स डॉक्टर हैरान रह गए. इस हेल्थ सेंटर मेंडॉक्टर किशोरों के सेक्स संबंधी सवालों का जवाब देते है.

जानकारी के लिए बता दें कि श्रीलंका में आज भी महिलाओं को शादी के लिए कुंआरी होने का सार्टिफिकेट देना पड़ता है. सबसे महत्वपूर्ण बात है कि लोगों ने इस सेंटर के खुलने का विरोध नहीं किया है.

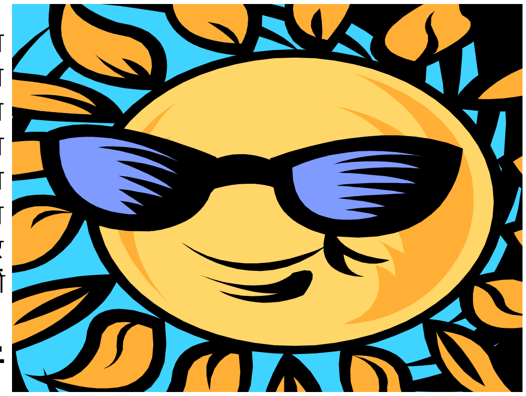

सूडान में सेक्स स्ट्राइक करने की अपील

ऑटो, रेल, बस और कई तरह की हड़ताल से आप भली भॉति परिचित होगें, लेकिन क्या आपने कभी सेक्स स्ट्राइक के बारे में सुना है. सूडान की एक यूनिवर्सिटी प्रोफेसर समीरा अहमद ने महिलाओं से सेक्स स्ट्राइक में शामिल होने की अपील की है. उनका कहना है कि इस स्ट्राइक में शामिल होने से सूडान में पिछले 19 साल से चल रहा गृहयुद्ध समाप्त हो सकता है.

समीरा का मानना है कि अगर महिलाएं अपने पति से यौन संबंध नहीं बनाए तो वे खुद ब खुद देश में शांति कायम करने की दिशा में कदम उठाएंगे. दक्षिणी सूडान में जंग में अपने बच्चे की मौत रोकने के लिए महिलाओं ने पति से शारीरिक संबंध बनाना कर दिया है. इसका असर भी दिखने लगा है. सर्वप्रथम इसे 20 आदिवासी महिलाओं ने प्रारम्भ किया, लेकिन अब इसमें हजारों महिलाएं इसमें जुड़ गई है. वैसे भी देखा जाए तो यह प्रथा बहुत पुरानी है. ग्रीस में युद्ध में भाग लेने वाले पुरुषों से महिलाएं दूर रहती थी. इसके अलावा समीरा लड़कियों की शिक्षा और उनकी सामाजिक व आर्थिक दशा सुधारने के लिए काम करती है.

vkSj vc bZ&ukd

अपने ऊंची नाक, नीची नाक और कटी नाक के बारे में तो सुना ही होगा. नाक को शान का प्रतीक समझा ही जाता हैं. अगर नाक सुंदर हो तो चेहरे की सुंदरता में भी चार चांद लग जाते हैं. अब वैज्ञानिकों की कलाकारी के कारण नाक एक नए रुप में हमारे सामने हैं, इलेक्ट्रॉनिक नाक यानि ई–नाक. चौंके नहीं, जब ई–शादियां हो सकती हैं ई–शांपिग हो सकती है ई–बिजनेस हो सकता तो ई–नाक क्यों नहीं. इसकी खासियत है कि यह इंसान को आने वाले खतरों से आगाह करती हैं न्यूजीलैंड के वैज्ञानिकों ने यह नाक बनाई है. यह नाक उन दुकानदारों के लिए खतरे की घंटी है जो खाने–पीने की चीजों में मिलावट करके अपना उल्लू सीधा करते हैं. मिलावट होने पर यह नाक इसके संकेत दे देती हैं. इनमें अगर जहर मिला हो तो इसका पता भी इस नाक से चल जाता है. मजेदार बात यह है कि कहीं आग लग सकती है या कहीं गैस लीकेज हो तो ई–नाक इसके बारे में भी इशारा कर देती हैं.

गुप्त रोग ताकत जवानी

xqIr jksxksa ds 'kfrZ;kbZykt gsrq vkt gh feysa

सेक्स या शुक्राणु समस्या ग्रसित रोगियों का निदान सम्भव

नोटः ध्यान रहे, सही समय पर सही प्रयास और उचित इलाज ही रोगी को ठीक कर सकता है, गारण्टी नहीं। बल्कि सफल इलाज करवाकर रोग को जड़ से समाप्त करें।

मिलने का समयः

प्रातः 9 बजे से रात्रि 8बजे तक, रविवार को प्रातः 9 बजे से 2 बजे तक।

नोट : उत्तर भारत में हमारी कोई शाखा नहीं है।

हमारे यहॉ आधुनिक तरीके से तैयार युनानी + आयुर्वेदिक पद्धति द्वारा सरल एवं सफल इलाज करवा के हर मौसम में बगैर किसी नुकसान के लाखों निराश रोगी नया जीवन पा चुके हैं। हमारे इलाज के तरीके का लोहा सर्वश्रेष्ठ गुप्त रोग विशेषज्ञ भी मानते है।

आखिर गुप्त रोग है क्या? जिसे घर वालों से गुप्त, पास–पड़ोस से गुप्त मित्रों से गुप्त, यहॉ तक कि पत्नी से भी गुप्त रखा जाये, क्या गुप्त रोग कोई समस्या है? क्या गुप्त रोग छुआछूत है? या फिर गुप्त रोग भूत–प्रेत है? अगर आप में से आपके जानने वालों में से परेशान है तो कृपया कोई भी ऐसा सुझाव न दें, जिससे रोगी घबराहट या परेशान होकर आजकल के लुभावनें प्रचारों जैसे गारण्टी और चन्द दिनों के अन्दर ठीक करने का दावा करने जैसे प्रचारों पर ध्यान देने लग जाये और बाद में अपना पूरा जीवन अंधेरे में बिताने पर मजबूर हो जायें। ऐसे रोगियों के लिए **"न्यू हेल्थ क्लीनिक"** के प्रसिद्ध विशेषज्ञ डॉक्टर का मशवरा है कि यदि आप नपुंसकता, शीघ्र पतन, स्वप्नदोष, धातु रोग, पेशाब में जलन सुस्ती, कमद दर्द, पेट रोग, गर्मी सुजाक जैसे आदि रोगों का शिकार हो चुके हों और जगह–जगह इलाज के बाद भी सफलता न मिली हो तो आज ही **"न्यू हेल्थ क्लीनिक"** में आकर **डॉक्टर एम.आर.शाही** गवर्नमेंन्ट रजिस्टर्ड सेक्स स्पेशलिस्ट से मिलकर सरल एवं सफल इलाज करवाकर वैवाहिक जीवन का भरपूर लाभ उठायें।

न्यू हेल्थ क्लीनिक

सेन्ट्रल होटल बिल्डिंग (डा0 झा के ठीक सामने), घंटाघर चौराहा, इलाहाबाद

jktk gks ;k jkuh] fi;s lc jktjkuh

राजरानी®

pk;

dkgD;k pk; gSa] dkgD;k Lokn gS

1रुपये, दो रुपये 50ग्राम, 100ग्राम, 250ग्राम, 500ग्राम व 1 किलोग्राम के पैक में उपलब्ध

हमारे अन्य प्रोडक्टः

राजरानी सब्जी मसाले, राजरानी हल्दी, राजरानी लाल मिर्च, राजरानी सेवई, राजरानी ऑवला चूर्ण, राजरानी चटपटा, राजरानी हींग, राजरानी मीट मसाला, राजरानी

ज्योतिष शास्त्र के तीन....

पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा, पूर्वाभाद्रषद, भरणी तथा मघा ये अधेमुखी नक्षत्र हैं. इनमें कुआं खुदवाना, तहखाना बनवाना, खान खोदना आदि कार्य सिद्ध होते हैं.

आर्द्रा, पुष्य, श्रवण, घनिष्ठा, शतभिषा, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद और रोहिणी ये ऊर्ध्वमुख नक्षत्र हैं इनमें मकान खड़ा करना, पहाड़ पर चढ़ना आदि कार्य सिद्ध होते हैं.

मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधा, हस्त स्वाती, इनमें बॉध, वाहन बनवाना आदि कार्य सिद्ध होते हैं।

क्रय–विक्रय संबंधी योग–रेवती, शतभिषा, अश्विनी, स्वाती श्रवण, चित्रा संज्ञक नक्षत्रों में वस्तुओं को खरीदना शुभ होता हैं जबकि पूर्वाफाल्गुनी पूर्वाषाढ़ा, पूर्वाभाद्रपद, विशाखा, कृतिका, आश्लेषा एवं भरणी में वस्तुओं को बेचना शुभ होता हैं.

jkf'kQy ekg vxLr

पं0 शम्भू नाथ मिश्रा

मेषः आगे बढ़ने की प्रबल संभावना इस समय बन रही हैं. व्यवस्थित दिनचर्या रखें और आगे बढ़ें. भगवान की कृपा से तरक्की की भी संभावनाएं बन रही हैं

वृषभः कई नई योजनाओं पर काम करेंगे, मगर इस दिशा में शीघ्र ही एक निर्णय लेना ठीक रहेगा. अपने से वरिष्ठों से मार्गदर्शन लें. सफल रहेंगे. स्वास्थ्य के प्रति भी सतर्क रहें.

मिथुनः निकट के मित्रों का सहयोग मिलेगा. बौद्धिक प्रतिभा का विकास होगा. व्यावसायिक पक्ष की दृष्टि से भी आप मजबूत होंगें.

कर्कः व्यवसाय कार्य मन्दा रहेगा. अध्ययन–अध्ययवसाय में सफलता मिलेगी. परिवार में मंगल कार्य होंगे. व्यर्थ की भागदौड़ से बचें.

सिंहः रोजी–रोजगार मे परेशानी संभव हैं. वायु–विकार, खांसी–ज्वरादि से कष्ट की स्थितियां बनेंगी. पत्नी–संतान से कष्ट का योग हैं.

कन्याःमाह के शुरु में शारीरिक दिक्कतें रहेंगी. अनावश्यक व्यय से मानसिक चिंता बढ़ेगी. संतान पक्ष से कष्ट संभव हैं. जीवनयापन में दिक्कते आएंगी.

तुलाः ऋण लेने की नौबत को टालें. पत्नी को लेकर चिंता रहेंगी. उत्तेजना से काम बिगड़ सकते हैं. सोमवार को गणेशजी की पूजा श्रेयस्कर हैं.

वृश्चिकः सामाजिक मान–प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी. कुटुम्ब के प्रति आपके दायित्व बढ़ेंगें. इष्ट मित्रों से वैचारिक मतभेद उत्पन्न होगा. उत्तरार्द्ध में अन्न, द्रव्य, वस्त्र आदि का लाभ मिलेगा.

धनुः माह के उत्तरार्द्ध में शारीरिक पीड़ा संभव हैं. इसके लिए शिवजी की उपासना लाभदायक होगी. परिवार के प्रति अपने कर्तव्यों को समझे, क्योंकि परिवार को आपकी सख्त जरुरत हैं.

कुंभः माह के उत्तरार्द्ध में यात्राओं से कष्ट रहेगा. व्यर्थ के मामलों में बलात् घसीटा जाएगा. व्यय पर नियंत्रण रखें. ध्यान का सहारा लें, काम बनेंगें.

मीनः व्यापार–नौकरी में सामान्य लाभ रहेगा. बकाये धन की प्राप्ति होगी. मित्रों से सहयोग मिलेगा. नौकरी के लिए जैसा सोचा है, वैसे परिवर्तन के योग बन रहे हैं.

मास के व्रत एवं त्योहार

3.08–गणेश चतुर्थी, 11.08–पुरुषोत्तमी एकादशी,15.08–स्वतंत्रता दिवस,17.08–सिंह संक्रांति चंद्र दर्शन,19.08–हरियाली तीज, 20.08–नाग पंचमी, 23.08 – दुर्गाष्टमी, 26.8–पवित्रा एकादशी, 27.08–प्रदोष व्रत, 30.8–रक्षाबंधन

वैधव्य

दुल्हन को लेकर बारात एक पहाड़ी रास्ते से गुजर रही थी. अचानक दुल्हन को प्यास लगी. नाचने गाने में मस्त बाराती उसकी एक नहीं सुन रहे थे. काफी दूर जाकर डोली नीचे रखी गयी. पानी बहुत दूर नीचे दुर्गम जगह पर था. वहां जाने का कोई साहस नही कर रहा था. आखिर एक युवक पानी लाने के लिए तैयार हुआ. उसके दुस्साहस की सब हंसी उड़ाने लगे. दूल्हें ने तो व्यंग्य के साथ कहा–'अगर तुम पानी ला सके तो दुल्हन तुम्हें दे दूंगा.' बेहाल हुए युवक ने जैसे ही पानी लाकर दुल्हन की प्यास बुझाई वैसे ही उसके प्राण पखेरु उड़ गए. बारातियों ने दुल्हन को डोली में बेठने के लिए कहा तो वह बड़े इत्मीनान से बोली—'मैं अब डोली में नहीं बॅठूंगीं, क्योंकि मैं विधवा हो चुकी हूं.'

लेखराम शर्मा

नम्रता

चीन के एक संत ने अपने अंतिम समय में सभी शिष्यों को अपने पास बुलाया और पूछा–"बच्चों, मेरे मुंह में कितने दांत हैं?" शिष्यों ने कहा–" गुरुवर एक भी नहीं." "और जीभ?"– गुरु ने पूछा–"वह तो है."–सभी ने कहा.

"क्यों? ऐसा क्यों? जीभ तो जन्म के समय से थी, दांत बाद में आए, प्रकृति के नियम के अनुसार तो जो पहले आते हैं वो पहले जाते हैं, बाद वाले को बाद में जाना चाहिए था, हैं न?"गुरु प्रश्न पर सभी निरुत्तर थे.

"बच्चों, जीभ कोमल हैं, दांत कठोर. इसीलिए जीभ अभी भी हैं और दांत कठोर होने के कारण टूट गए. याद रखों, नम्रता, कोमलता लम्बे समय तक साथ देती हैं." गुरु ने कहा.

बफैजे–मसलहत ऐसा भी होता हे जमाने में,
कि रहज़न को अमीरे–कारवाँ कहना ही पड़ता है
न पूछो क्या गुजरती है दिल–ए–खुद्दार पर अपने,
किसी बे–मेहर को जब मेहरबाँ कहना ही पड़ता है।। **जगन्नाथ आजाद**

जिन्दगी सत्य भी कहानी भी, जिन्दगी आग और पानी भी।
जिन्दगी से रहे शिकायत क्यों, जिन्दगी एक मेहरबानी भी।। **चन्द्रप्रकाश शर्मा**

यादों के झरोखे से ओलम्पिक खेल

ओलंपिक में व्यक्तिगत पदक जीतने वाले दूसरे भारतीय :पेस

कोलकाता में 17 जून 1973 को जन्में लिएंडर पेस ने छह वर्ष ही उम्र से ही टेनिस खेलना शुरु कर दिया था, जबकि उनका पसंदीदा खेल फुटबॉल हुआ करता था. 1996 के अटलांटा ओलंपिक के टेनिस एकल मुकाबले में जीता गया कांस्य पदक इस समय उनके लिए सबसे अमूल्य धरोहर हैं. उनकी यह जीत इसलिए भी महत्वपूर्ण है कि ओलंपिक में व्यक्तिगत मुकाबले में पदक जीतनेवाले वे भारत के मात्र दूसरे खिलाड़ी हैं सेमीफाइनल में उनके सामने अजये माने जाने वाले अमेरिकी आंद्रे आगसी थे, लेकिन उन्होंने डटकर मुकाबला किया और पहले सेट में तो मामला टाई–ब्रेकर पर छूटा. हालांकि आखिर में वे 7–6 और 6–3 से यह मुकाबला हार गये. कांस्य के लिए उन्हें फनैडो मेलिजेनी से भिड़ना पड़ा. पेस ने यह मैच 3–6, 6–2, और 6–4 से जीता.

पेस को सिडनी ओलंपिक खेलों के उद्घाटन समारोह में भारत का ध्वज संभालने का गौरव हासिल हुआ था. इन खेलों में पुराने साथी महेश भूपति के साथ वे युगल मुकाबले में शामिल हुए लेकिन पहले ही चक्र में बाहर हो गए. पिछले साल जब उनके मस्तिष्क में पैदा हुई गांठ के लिए आपरेशन की घड़ी आई तो सारे देश की सांसे थम सी गई. लेकिन यहां भी वे विजेता बनकर उभरे और लौटते ही 2003 में ऑस्ट्रेलियाई ओपन में उन्होंने मिश्रित युगत का खिताब जीता. उनके लिए ओलंपिक खास अर्थ रखता है. उनका कहना है, जब आम आदमी से लेकर राष्ट्रपति तक आपके समर्थन में आगे आते हैं तो आपको अपना सर्वश्रेष्ठ प्रर्दशन दिखाने के लिए जी–जान से जुटना ही होगा. एक अरब से अधिक लोगों का प्रतिनिधित्व करना किसी जादू से कम नहीं हैं. और यही लोग तो मुझमें ऊर्जा भरते हैं.0

महान ओलंपियन मार्क स्पित्ज

मार्क स्पित्ज जब बच्चा था, उसके पिता हमेशा उससे कहते, 'सिर्फ तैरना ही सब कुछ नहीं है बल्कि जीतना भी चाहिए.' स्पित्ज ने अपने पिता के शब्दों को सच कर दिखाया. 1972 के म्यूनिख ओलंपिक में उसने तैराकी में सात स्वर्ण पदक जीते. किसी एक खेल में इतने स्वर्ण पदक जीतने वाला वह अकेला खिलाड़ी हैं.

चार साल पहले 1968 के मेक्सिकों ओंलपिक में 18 वर्षीय इस तेज–तर्रार युवक ने उन खेलों में घोषणा कर दी कि तैराकी के सभी छह स्पर्धाओं में वह स्वर्ण पदक जीतेगा. हालांकि अपने दावे को पूरा करने में वह असफल रहा और उसे मिले केवल दो पदक. रिले में रजत और व्यक्तिगत में उसे कांस्य पदक से ही संतोष करना पड़ा. लेकिन म्यूनिख में उसने पहले ही फाइनल में पिछली बार की निराशा भरी यादों को मिटा दिया. 200 मीटर बटरफ्लाई में विश्व रिकार्ड कायम करते हुए उसने स्वर्ण जीता. अगले आठ दिनों की प्रतियोगिता में केवल एक दिन आराम करते हुए स्पित्ज ने प्रारंभिक सहित 13 तैराकी प्रतियोगिताओं में भाग लिया. तीन रिले सहित उसने प्रत्येक के फाइनल में रिकार्ड स्थापित किए. पूरे नौ ओलंपिक स्वर्ण पदक जीत कर उसने पावो नुरमी, लैरिसा लैटीनिनना और कार्ल लुईस का रिकार्ड बराबर किया.

उत्तर बताएं और जीतें हजारों रुपये के ईनाम

प्रश्न :2000 कें ओलपिंक खेलों के उद्घाटन समारोह में भारत का ध्वज संभालने का गौरव किसे हासिल हुआ था?

अपना उत्तर हमें 20 अगस्त–04 के तक पत्रिका के पत्र व्यवहार के पते पर अपने नाम, पता लिखते हुए भेजें

इलाहाबाद विकास प्राधिकरण, इलाहाबाद

का अभूतपूर्व निर्णय

चौक घंटाघर, व्यवसायिक केन्द्र में

दुकानों के मूल्य में 30 प्रतिशत की कमी

शहर के मध्य में दुकान प्राप्त करने का **स्वर्णिम अवसर**

पहले आओ पहले पाओ

इलाहाबाद विकास प्राधिकरण की चौक घंटाघर व्यावसायिक केन्द्र में पूर्व निर्मित दुकानों के पूर्व घोषित मूल्य कीं अपेक्षा लगभग 30 प्रतिशत कम मूल्य पर द्वितीय तल एवं तृतीय तल पर दुकानों के विक्रय हेतु पंजीकरण आमंत्रित किये जाते हैं।

क्र. सं.	रिक्त दुकानों /तल की संख्या	दुकान का क्षेत्रफल (वर्ग मी.)	अनुमानित दर (रु0)	दुकानों के क्षेत्रफल पर आधारित न्यूनतम आरक्षित मूल्य (रु0)
1.	20/द्वितीय तल	11.651 से 16.833 तक	23,500.00 प्रति वर्ग मी.	2,73,800/–से 3,95,600/– तक
2.	79/तृतीय तल	03.549 से 13.814 तक	23,500.00 प्रति वर्ग मी.	83,500/– से 3,21,700/ तक

नियम एवं शर्ते :

- दुकानों का विक्रय/आवंटन जहां है जैसा है के आधार पर किया जायेगा।
- दुकानों का आवंटन प्रथम आगत प्रथम पावत के आधार पर किया जायेगा, परन्तु एक ही दुकान हेतु एक दिन में एक से अधिक पंजीकरण प्राप्त होने की दशा में आवंटन लाटरी द्वारा किया जायेगा।
- प्रत्येक दुकान का मूल्य अनुमानित है। पंजीकरण धनराशि के रुप में दुकान निर्धारित मूल्य की 10 प्रतिशत धनराशि, सिंडीकेट बैंक, सिविल लाईन्स, इलाहाबाद में जमा करना होगा।
- कब्जा प्राप्ति करने हेतु दुकान के अनुमानित मूल्य की 40 प्रतिशत धनराशि जमा करने के पश्चात निर्धारित स्टैम्प पेपर पर अनुबन्ध पंजीकृत कराना होगा।
- आवंटन की अन्य शर्ते आवंटन नियमावली, प्राधिकरण के नियम तथा उपनियम एवं समय–समय पर शासन द्वारा निर्गत शासनादेश के अनुसार होगी।

भुगताान पद्धति–

- दुकान के आवंटन के पश्चात 40 प्रतिशत धनराशि आवंटन–पत्र निर्गत होने के पश्चात जमा करना होगा जिसमें जमा पंजीकृत धनराशि को भी सम्मिलित कर लिया जायेगा। शेष 60 प्रतिशत धनराशि 18 प्रतिशत ब्याज सहित 6: त्रैमासिक किश्तों में जमा करना होगा।
- दुकान के मूल्य में मांगी गई धनराशि निर्धारित समय से विलम्ब से जमा करने पर नियमानुसार दण्ड ब्याज देय होगा।
- नकद भुगतान की शर्तो पर न्यूनतम आरक्षित मूल्य का 5 प्रतिशत की छूट का प्राविधान किया गया है, जिसका भुगतान आवंटन–पत्र निर्गत होने की तिथि से 60 दिनों के अन्दर करना होगा तथा नकद भुगतान करने वाले को अपनी लिखित सहमति देनी होगी।

विशेष जानकारी के लिये जोनल अधिकारी अथवा जन सम्पर्क अधिकारी कसे कार्यालय दिवस में सम्पर्क किया जा सकता है।

ज्ञानेन्द्र वर्मा	आर.एन.सिंह	ओ.पी.एन.सिंह
उपसचिव/जोनल अधिकारी	सचिव	उपाध्यक्ष

हिन्दी विज्ञान लेखन पर उत्कृष्ट ग्रन्थ

1. हिन्दी में विज्ञान लेखन के सौ वर्ष (प्रथम खण्ड) पृष्ठ : 406, **मूल्य** : 250 रुपये

एवं

2. हिन्दी में विज्ञान लेखन के सौ वर्ष (द्वितीय खण्ड) पृष्ठ : 450, **मूल्य** : 250 रुपये

संपादक : डॉ0 शिवगोपाल मिश्र **प्रकाशकः** विज्ञान प्रसार, नई दिल्ली

3. स्वतंत्रता परवर्ती हिन्दी विज्ञान लेखन भाग–1 (1950–1970) पृष्ठ : 352, **मूल्यः** 250 रुपये

तथा

4. स्वतंत्रता परवर्ती हिन्दी विज्ञान लेखन (1971–2000) पृष्ठ : 462, **मूल्य** : 450 रुपये

संपादक : डॉ0 शिवगोपाल मिश्र एवं डॉ0 विष्णुदत्त शर्मा

प्रकाशकः शोध प्रकाशन अकादमी गाजियाबाद

पुस्तकों के क्रय हेतु सम्पर्क करें:–

विज्ञान परिषद् प्रयाग
महर्षि दयानन्द मार्ग
इलाहाबाद–211002

नोटः (इन सभी प्रकाशनों की खरीद पर 20 प्रतिशत की छूट उपलब्ध है)